चैतन्य लहरी

खंड : XVI अंक : 1 व 2 जनवरी - फरवरी 2004

3 श्रीमाताजी का एक पत्र, 17 अगस्त, 1978

5 श्री कृष्ण पूजा – प्रतिष्ठान, पुणे, 10 अगस्त, 2003

9 श्री गणेश पूजा – कबेला, 13.9.2003

11 ज्ञानेश्वरी से भविष्यवाणियाँ, बोर्डी, 12.2.1984

18 निर्मल विद्या

20 मैं ही आदिशक्ति हूँ। न्यूयार्क, 30.9.1981

31 श्री माताजी का प्रवचन, बम्बई, 20.1.1975

40 श्री माताजी के कथन

41 अहं एवं प्रतिअहं, 18.12.1978

42 श्री माताजी का प्रवचन–ब्रिटेन, 15.11.1979

प्रकाशक
वी.जे. नलगीरकर
162 - ए, मुनीरका विहार, नई दिल्ली - 110067

मुद्रक
अमरनाथ प्रैस प्रा. लिमिटेड
डब्ल्यू एच एस 2/47, कीर्ति नगर औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-15
फोन : 25921159, 55458062

सदस्यता के लिए कृपया इस पते पर लिखें :-
श्री ओ. पी. चान्दना
एन - 463 (जी-11) , ऋषि नगर, रानी बाग
दिल्ली - 110034
फोन : 27031889
E-mail : chaitanyalahiri@indiatimes.com

सहज सम्बंधी अपने अनुभव, चमत्कारिक फोटोग्राफ तथा कलाकृतियाँ निम्न पते पर भेजें :

चैतन्य लहरी
सहजयोग मंदिर
सी-17, कुतुब इन्स्टीच्यूशनल एरिया
नई दिल्ली - 110016

श्रीमाताजी का स्वयं पत्र

Mataji Nirmala Devi Srivastava

17th Aug. 1978

अनेकानेक आशिर्वाद,

अत्यन्त प्रेमाने पाठविलेल्या राखी मिळाल्या। राखी म्हणजे रक्षा करणारी शक्ती। त्या शक्ती चे कर्तृत्व फार जोरदार आहे व अत्यन्त कोमल हि आहे कारण ते बहिणी त्या पवित्र प्रेमाचे द्योतक आहे। ज्याला इतक्या राखी बांधली तेचे मग निर्मल रक्षाचे स्थान स्थापित केले असे मान्य आहे। तरी मानवाची प्रेम संवेदन शक्ती इतकी कमी झाली आहे कि राखी बांधणे ही एक यांत्रिक क्रिया मात्र झाली आहे। जर हृदयाच्या ओलावा नसला तर सर्व सुन्दर मानवी परम्परा शुष्क नी निर्जीव होऊन जातात।

सहजयोग्यांच्या बन्धनांतच आम्ही संसारात जन्म घेतला आहे। व पूर्णपणे त्याच्या बन्धनांतच वावरत आहोत। आम्ही Desireless तेव्हा तुमच्याच इच्छेवर आमचे सारे कांहि अवलम्बून आहे।

रात्री बोरावर कांदिवलीत भागांत लागले। ते सहज
योग्यांना विचारून करवीन। एक सामुहिक
पण लिहून त्यात जे भाग्य असेल ते लिहावे।

आमची प्रकृती उत्तम आहे कारण तुम्हीं
सर्वांची सौ. इच्छा आहे। कानाचे एक लहानसे
operation आहे ते फार अवघड काहीच करू नये।
दुसरे म्हणजे त्रास मुळीच नाही। त्याची चिंता करू नये।

रात्री दोघींना भेटा दिवस आहे। त्या दिवशी
पूजेच्या आधी भागात करावे। मोठे मोठे मनसूबे बांधले
पाहिजेत। चित्त नेहमी उच्च गोष्टींकडे ठेवले
पाहिजे। लहान सहान गोष्टींत सहजयोग्यांनी
आपले चित्त नष्ट करू नये। अजून पुष्कळ कार्य
करायचे आहे। ज्या २ सहजयोग्यांनी प्रगती केली आहे
त्यांनी कार्यरत झाले पाहिजे। नवीन २ Centers उघडले
पाहिजेत। लोकांचे रोग निवारण झाले पाहिजे। व जनतेचे
लक्ष परमेश्वर प्राप्ती कडे वेधले गेले पाहिजे।
हे पण सर्व सहजयोग्यांना सांभाळत राहावे

तुमची सदैव आठवण करणारी माई – निर्मला

श्री क ष्ण पूजा

प्रतिष्ठान, पुणे, 10-8-2003

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

हम लोगों को अब यह सोचना है कि सहजयोग तो बहुत फैल गया और किनारे किनारे पर भी लोग सहजयोग को बहुत मानते हैं। लेकिन जब तक हमारे अन्दर सहजयोग पूरी तरह से व्यवस्थित रूप से प्रकटित नहीं होगा तब तक जैसा लोग सहजयोग को मानते हैं मानेगें नहीं। इसलिए ज़रूरत है कि हम कोशिश करें कि अपने अन्दर झांकें। यही क ष्ण का चरित्र है कि हम अपने अन्दर झांके और देखें कि हमारे अन्दर खुद कौन सी, कौन सी ऐसी चीज़े हैं जो हमें दुविधा में डाल देती हैं। इसका पता लगाना चाहिए। हमें अपने तरफ देखना चाहिए, अपने अन्दर देखना चाहिए और वो कोई कठिन बात नहीं है। जब हम अपनी शक्ल देखना चाहते हैं तो हम शीशे में देखते हैं। उसी प्रकार जब हमें अपनी आत्मा के दर्शन करने होते हैं तो हमें देखना चाहिए कि हमारे अन्दर वो कैसे देखा जाता है। बहुत से सहजयोगियों ने कहा माँ यह कैसे देखा जाएगा कि हमारे अन्दर क्या है, और हम कैसे हैं? उसके लिए ज़रूरी है कि मनुष्य पहले स्वयं ही बहुत नम्र हो जाए क्योंकि अगर आपमें नम्रता नहीं होगी तो आप अपने ही विचार लेकर बैठे रहेंगे। तो क ष्ण के जीवन में पहले दिखाया गया कि एक छोटे लड़के के जैसे वो थे। बिलकुल जैसा शिशु होता है, बिलकुल ही अज्ञानी, वैसे वो थे। वो अपने को कुछ समझते नहीं थे। अपनी माँ के सहारे वो बढ़ना चाहते थे। इसी प्रकार आप लोगों को भी अपने अन्दर देखते वक्त यह सोचना चाहिए कि हम एक शिशु बालक हैं। क ष्ण ने बार बार कहा, लेकिन जीसस क्राइसट ने भी कहा हम एक छोटे बालक बनें। बालक की जो सुबोध स्वभाव की छाया है वो हमको दिखनी चाहिए कि हम क्या बालक जैसी बाते करते हैं? हमारे अन्दर कौन सा ऐसा गुण है कि हम बालक बन जाते हैं। बालक यानि अबोधिता, भोलापन और उस भोलेपन से हमें अपने अन्दर देखना चाहिए और उसी से अपने को ढकना है। अब वो भोलापन बड़ा प्यारा होता है। आप अगर, आप बच्चों को देखें उनसे जो प्यार करते हैं वो इसलिए कि वो भोले हैं। वो चालाकी नहीं जानते, अपना महत्व नहीं जानते, कुछ भी नहीं जानते। क्या जानते हैं? वो जानते यह हैं कि सब कोई लोग हमारे हैं। ये हमारे भाई बहन और सब कुछ हैं। लेकिन ये किस तरह से उन्होंने जाना, यह प्रश्न है। बच्चों ने जिस तरह से जाना उसी तरह से हमने भी भुला दिया कि हम भी एक भोले बालक हैं और एक भोलापन हमारे अन्दर है। बहुत से सहजयोगी ऐसे हैं जो आते हैं वो बहुत कपट चालाकी दिखाने। कोई आते हैं और सोचते हैं कि हम बहुत होशियार हैं। कोई आते हैं और सोचते है कि हम माँ को सिद्ध कर देंगे। मुझे सिद्ध करने से क्या फायदा। मुझे तो मालूम ही है सब कुछ। तो आपको यह करना चाहिए कि अपनी ओर नज़र करें। और अपने भोलेपन को पहचानें। वो कहाँ है, कैसा है, और बड़ा मजेदार है ऐसा सोचना चाहिए। अब क ष्ण की जो बात है वो यही है कि बचपन में तो वो एकदम भोले थे और बड़े होने पर उन्होंने गीता समझाई जो बहुत गहन है। ये कैसे हुआ कि मनुष्य उसमें बढ़ गया। इसी प्रकार हम भी सहज में बढ़ सकते हैं।

हमने पाया है लेकिन उसमें अभी तक हम बढ़े नहीं। और बढ़ने के लिए चाहिए कि अपने बारे में जो ख्यालात हैं उसको छोड़ दें। पहले तो बच्चे जैसा स्वभाव होना चाहिए। अब ऐसा किसी को कहें कि बच्चे जैसा स्वभाव बनाओ तो बहुत ही कठिन बात है। ऐसा तो नहीं कर सकते कि जो है उसे छोड़ कर आप बच्चे बन जाओ। लेकिन बच्चों के

साथ रहकर, बच्चों के प्रति एक आस्था रखकर, उनकी बातों को देखकर आप बहुत फर्क कर सकते हैं, और बदल सकते हैं सारी चीजें अपने अन्दर की। तो सबसे पहले तो जानना चाहिए कि हमारे अन्दर जैसे जैसे हम बड़े होने लगे बहुत से दोष समा गए हैं। उन दोषों को कैसे निकालना चाहिए? कैसे–कैसे दोष हमारे अन्दर आए हैं। इसको अगर हम सोचें नहीं और उधर ध्यान दें तो हम उसको ठीक कर सकते हैं। ध्यान ऐसे देना है कि जैसे हम किसी से ज़ोर, घ ष्टता से बात करें या हम किसी की ताड़ना करना चाहते हैं या हम सोचते रहते हैं कि दूसरे आदमी को हम कैसे ठीक करें। **जब हमारा चित्त दूसरों पर जाता है तभी हम अपने से अलग हट जाते हैं। क्योंकि हमें खुद ठीक होना है इसलिए दूसरों के बारे में सोचने से क्या फायदा?** तो सबसे पहले हमे अपने बारे में ही द ष्टिपात करना चाहिए, देखना चाहिए। पर वो सब हो रहा है और वो बताया हमने। वो तो सहजयोगियों में घटित भी हो रहा है। क्योंकि अन्दर यह कुण्डलिनी जाग त होती है और वो सब रास्तों में दिखा देती है। अब रही बात यह कि हम किस तरह से जो मलिनता है उसको ठीक करे। पहली तो बात यह है कि दूसरों के दोष देखने की जो हमारी द ष्टि है उसको बदल दें, क्योंकि वही दोष हमारे अन्दर भी हैं। तो दूसरों के दोष देखने से पहले हमारे अन्दर क्या दोष हैं यह देखना चाहिए। अगर यह देखना हमें आ जाए तो बहुत कुछ अपने आप ठीक हो जाएगा। कोई साधु सन्तों का क्या है कि वो अपने अन्दर के ही दोष देखते हैं और अपने ही को सोचते हैं कि ऐसे क्यों हो गए हम? ऐसी कड़वी बात हम क्यों कहते है। ऐसी झूठी बात क्यों कहते हैं? तो ये अपने को देखने का एक प्रवाह है। ज़्यादातर हम उसको मानते नहीं हैं और उस प्रवाह में बहते नहीं है। हम अपने को उससे अलग समझते हैं पर ऐसी बात नहीं है। अगर हम समझ लें कि हमारे अन्दर जो यह प्रवाह है, जो हमें ऐसे रास्ते पर ले जाता है कि जहां हम अपने ही को नहीं पहचान सकते तो फिर आदमी अन्दर की तरफ मुड़ सकता है। अब कहने से कि तुम अन्दर की तरफ जाओ, ध्यान करो, अपने अन्दर की बहुत सी बातें निकालो, सब कहने को तो कह देंगे पर उससे नहीं होगा। इसलिए प्यार करने में प्रयत्नशील रहना चाहिए। और हमारे पास ऐसे साधन हैं जैसे क ष्ण का ध्यान करना। क ष्ण के ध्यान से हमारे अन्दर की सफाई हो जाती है। पर हम उल्टे है और क ष्ण के ध्यान में, हम यह सोचते हैं कि हम दूसरों के दोष देखते हैं। जब हम क ष्ण का दोष देखते है तो हमें दिखाई देता है पर हमें अपना दोष नहीं दिखाई देता। यह हमारे साथ बहुत ज़्यादती है कि हम अपने दोष नहीं देख सकते। क ष्ण के दोष तो देख लेंगे। बहुत से लोग हैं, मैंने देखा है कि किताबें लिखी हैं उन्होंने कि क ष्ण में क्या क्या दोष थे। क्या गलत कार्य किए? उनको कैसे रहना चाहिए था? अपने बारे में वो नहीं जानते। लेकिन जब अपने बारे में भी सोचते हैं और जब देखा जाता है, तो कभी भी यह द ष्टि नहीं होती कि हमारे अन्दर यह दोष है और यह चला जाना चाहिए। तो हम दूसरों के दोषों पर जाकर अटक जाते हैं। यही हमको करना है कि अपने अन्दर क्या दोष है उसे देखा जाए। क ष्ण से बढ़कर मैं कोई योगी मानती नहीं हूँ क्योंकि उन्होंने यह रास्ता बताया कि तुम अपने अन्दर की गलतियाँ देखो। अपने अन्दर के दोष देखो। यह बहुत बड़ी बात है। उन्होंने सिर्फ कह दिया और करने वाले बहुत कम हैं। अगर दूसरों के दोष देख लीजिए तो सबको याद है। सबको मालूम है। अपने दोष बहुत कम लोगों को समझ में आते हैं। इसलिए वो ठीक

नहीं हो पाते। अपने दोषों से परिचित होना चाहिए। हंसना चाहिए अपने ऊपर कि हम क्या दोष कर रहे हैं। हमारे अन्दर क्या दोष है। ये हमे सोचना चाहिए। बजाय इसके कि हम और लोगों के दोष देखें।

तो होता क्या है कि चित्त हमारे ऊपर नहीं रहता। दूसरों के दोषों पर जाता है और उससे विचलित हो जाते हैं हम लोग और समझ नहीं पाते कि अरे ये तो हमारे ही दोष थे। हम क्यों दूसरों के दोष देख रहे थे। उससे क्या हमारे दोष ठीक हो जाएंगे? बिलकुल नहीं हो सकते। धीरे धीरे जब यह बात समझ में आ जाएगी तो मनुष्य दूसरों के दोषों पर लक्षित नहीं होगा। अपने ही दोषों को देखकर हैरान होगा कि हमने कितने सारे ये राक्षस पाल रखे हैं अपने अन्दर। हमारे मन के अन्दर कितनी कितनी गन्दी बातें हम सोचते रहते हैं। जब यह सफाई शुरु होती है तो मनुष्य विशेष रूप धारण करता है। और वह रूप ये है कि उसके अन्दर शक्तियाँ आ जाती हैं और उस शक्ति से वह अनेक कार्य कर सकता है। इसलिए नहीं कि उसका अहंकार बढ़े पर इसलिए कि उसकी सफाई होगी। अगर उससे सफाई हो गयी तो अपनी सफाई का काम हो गया। तो दोष देखने से हम अपनी सफाई करते हैं और उन दोषों को छोड़ देते हैं। पर यह कैसे हो, क्योंकि दोष देखना तो मुश्किल नहीं है, पर उससे छूटना मुश्किल है। इसलिए उसका देखना जो है वो सूक्ष्म होना चाहिए और बारीक होना चाहिए और उस तरफ नज़र जानी चाहिए। उससे बहुत कुछ सफाई हो जाएगी। आज का जो पर्व है उसमें श्री क ष्ण का जो संदेश है वह यह है कि आप अपने अन्दर झाँको। और देखो। यह श्री क ष्ण ने कहा है। पर वो करना लोगों को मुश्किल लगता है। वो होता नहीं है। घटित नहीं होता। उसकी क्या वजह है? क्यों हम अपने को नहीं देख पाते? बीच में पर्दा क्या है? पर्दा यही कि अहंकार आदि जो दुर्गुण हैं वो खड़े हो जाते हैं और उन दोषों को हम देख नहीं पाते। जिनको देखना चाहिए। यह बहुत ज़रूरी चीज़ है। आपने आज की पूजा रखी, मैं बहुत खुश हो गई कि क ष्ण की पूजा हो जाएगी तो अन्दर से बहुत से लोग साफ हो जाएंगे। क्योंकि यह क ष्ण का कार्य है। वो खुद ही इसे करेंगे। पर अगर आप उधर रुचि दिखाएं कि आप चाहते हैं कि आपकी पूरी तरह से सफाई हो जाए। आप जानते नहीं कि कितना गहन हमारे यहाँ का यह प्रश्न है। इस प्रश्न को ठीक करने के लिए बड़ी मेहनत करनी पड़ी। लोग पहले तो सब कुछ करते थे, गुरु के आदेशों पर बहुत कुछ करते थे बेचारे, पर गहनता नहीं आती थी। अब आप तो सहजयोगी हैं आपके लिए मुश्किल नहीं होनी चाहिए। तो मैं यही कहूंगी कि अपने अन्दर झाँकना सीखिये। बड़ा मज़ा आएगा। अभी तक तो ठीक थे पर अभी पता नहीं क्यों इस तरह से करने लग गए। आप अपनी तरफ नज़र करिये। ये कैसा चलता है मामला। तो बड़ा मज़ा आएगा। आप देखकर हसेंगे और कहेंगे वाह क्या कहने। फिर एक तरह का भोलापन आपके अन्दर जागेगा। यही क ष्ण की बाल लीला है। जब यह भोलेपन से आप साफ होंगे, इसी से नहा लेंगे तो आपकी नजर बहुत Steady हो जाएगी। अपने आप अपने को आप समझने लगेंगे। असल में दोष हमारे ही अन्दर हैं। दूसरों के दोष देखने से हमारे कैसे ठीक होंगे? एक सादा सा प्रश्न है–अगर हमारी साड़ी पर कुछ गिरा है कि और हम इसे हटाते नहीं और दूसरों को बुरा कहते चले जाएंगे तो इतनी अकल तो है हमारे पास। पर वो अकल हम इस्तेमाल नहीं करते। किसी को समझ में अगर बात न आई

हो तो वो प्रश्न पूछ सकते हैं।

चित्त अन्दर जाता है। अब देखिए अपना चित्त जा रहा है अन्दर, पर हम डरते ही रहते हैं। पर अब अपने आप होना चाहिए। चित्त को आदत हो जाएगी कि वो आप अन्दर जाएगा।

मैं जानती हूँ कि आप लोगों के खूब प्रश्न हैं, खूब उलझने हैं इसमें कोई शक नहीं। लेकिन वो बहुत क्षुद्र हैं, उसका कोई अर्थ नहीं लगता। उससे उपर उठने की बात होती है हमेशा, पर लोग कहते है कि माँ कैसे उठा जाए। ध्यान से। ध्यान में आप अपने ऊपर ध्यान करते हैं। अपने ही को देखना है कि आपका दिमाग कहाँ चल रहा है? अब कहाँ घूम रहा है? धीरे–धीरे आपकी सफाई हो जाएगी। आज का दिन वैसे ही बड़ा महत्वपूर्ण है कि श्री क ष्ण का अवतार जो है इसने बहुत हमारी सफाई की है और बड़ी मदद की है। उनके आने से बहुत फर्क हो गया है। और कुण्डलिनी के जागरण में मैं देखती हूँ, क ष्ण के आशीर्वाद से बहुत सुन्दर चल रहा है। आप लोग ज़रा अपनी और ध्यान दें। एक तो अपने से नाराज़ नहीं होना और दूसरों से नाराज़ नहीं होना। बड़ा आनन्द आएगा। यही क ष्ण की पूजा है।

श्री गणेश पूजा

कबैला, 13-9-2003

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

(श्रीमाताजी बच्चों को मंच पर आकर बैठने के लिए बुलाती हैं)

अब हम नन्हें बच्चों के सम्मुख हैं। यही बच्चे अवतरण हैं। यही उत्थान प्राप्ति में मानव जाति का नेत त्व करेंगे। मानवता की देखभाल की जानी चाहिए। बच्चे कल की मानव जाति हैं और हम आज के हैं। अनुसरण करने के लिए हम उन्हें क्या दे रहे हैं? उनके जीवन का लक्ष्य क्या है? ये कहना अत्यन्त–अत्यन्त कठिन है परन्तु सहजयोग से वे मर्यादित ढंग से चलेंगे, मर्यादित व्यवहार करेंगे। बहुसंख्या में सहजयोगी बनने से सभी कुछ भिन्न हो जाएगा।

परन्तु बड़े सहजयोगियों का ये कर्तव्य है कि उनकी देखभाल करें, उनका चारित्रिक स्तर बेहतर हो, उनके जीवन बेहतर हों ताकि वे आपके जीवन का अनुसरण करके वास्तव में अच्छे सहजयोगी बन सकें। ये बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। सम्भवतः हमें इसका एहसास नहीं है। इस बात को हम नहीं समझते, परन्तु ये नन्हें शिशु महान आत्माओं की प्रतिमूर्ति हैं और इनका पालन पोषण भी उन्हीं के रूप में किया जाना चाहिए। वैसे ही इनका सम्मान होना चाहिए और अत्यन्त सावधानी से इन्हें प्रेम किया जाना चाहिए। ये बात समझ लेनी आवश्यक है। हमारे बड़ी आयु के लोगों की समस्या ये है कि हम बच्चों को ध्यान देने योग्य, परवाह करने योग्य और उन्हें समझने योग्य नहीं मानते, हम सोचते हैं कि हम स्वयं बहुत अधिक विवेकशील एवं अच्छे हैं तथा हमें अपनी शक्ति इन छोटे बच्चों पर नष्ट नहीं करनी चाहिए। बड़ी आयु के लोगों के साथ ये कठिनाई है।

परन्तु आज जब हम श्री गणेश की पूजा करने के लिए बैठे हुए हैं तो हमें जान लेना चाहिए ये बच्चे श्री गणेश के अवतरण हैं। तथा इनकी ओर उचित ध्यान दिया जाना चाहिए, उनकी हमें उचित जानकारी होनी चाहिए। मैं बहुत से ऐसे बच्चे देखती हूँ जो अत्यन्त सदाचारी हैं, सहज हैं और कुछ ऐसे भी हैं जिन्हें इस बात का ज्ञान ही नहीं कि वे क्या कर रहे हैं। अतः बड़े लोगों का ये कर्तव्य है कि अपने महत्व, आत्मसम्मान की समझ बच्चों के मस्तिष्क में भर दें। जिन सहजयोगियों पर अपने छोटे भाई–बहनों की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी हैं उन्हें भी मैं यही कहूंगी। हमारे सहजयोगी परिवार में सभी प्रकार के लोग तथा सभी प्रकार के व्यवहार हैं। निःसंदेह उनमें एक जुटता (Regimentation) और एक समानता (Uniformity) नहीं होनी चाहिए। परन्तु उनकी भिन्नता में भी सौन्दर्य होना चाहिए। एक दूसरे के साथ परस्पर सामंजस्य की सुन्दर प्रव त्ति होनी चाहिए।

परन्तु समस्या ये है कि ऐसा बनने के लिए हम क्या करें? इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बड़ी आयु के लोग क्या करें। उनके (बच्चों) जीवन में हमारा–ठोस योगदान क्या है? सर्वप्रथम तो हमने उन्हें बताना है कि श्री गणेश कौन हैं तथा उनके गुण कौन से हैं, वे किसका प्रतिनिधित्व करते हैं? वे किसका प्रतिनिधित्व करते हैं और उनके गुण क्या हैं। एक बार जब वो इस बात को समझने लगेंगे कि यद्यपि वे छोटे से बालक हैं फिर भी इतने उदार करुणामय एवं क्षमाशील हैं–तो वे आश्चर्य चकित हो जाएंगे क्योंकि वो भी अभी नन्हें बालक हैं, तथा वे इसी प्रकार के जीवन को अपना लेंगे।

मैं देखती हूँ कि यहाँ पर कुछ बच्चे अत्यन्त अच्छे एवं विवेकशील हैं, कुछ शरारती हैं और कुछ इस बात को नहीं समझते कि यहाँ पर हम क्या कर रहे हैं। जो भी हो आखिरकार वे बच्चे हैं। हमें उनकी देखभाल और सम्मान करना चाहिए और श्री गणेश के विषय में उन्हें पूरी तरह से समझाना चाहिए। मेरा विचार है कि सभी लोग अपने–अपने

घर में श्री गणेश की एक मूर्ति–स्थापित करें ताकि बच्चे इसे देखें और पूछें कि "ये कौन हैं?" "ये क्या कर रहे हैं?" आप हैरान होंगे कि किस प्रकार बच्चे आपको समझते हैं, किस प्रकार श्री गणेश के गुणों को समझते हैं, और किस प्रकार उन्हें कार्यान्वित करते हैं। आप सबके लिए ये आवश्यक है कि अपने घर में श्री गणेश की एक मूर्ति लगाऐं ताकि आप अपने बच्चों से बता सकें कि 'आपको भी इन्हीं की तरह से बनना है।'

अब श्री गणेश के गुण क्या हैं? बच्चों को पावित्र्य (Chastity) समझ नहीं आएगा क्योंकि वो अभी बहुत छोटे हैं इसलिए ये सभी गुण नहीं समझ पाएंगें। परन्तु एक गुण उनकी समझ में आ जाएगा कि ईमानदार होना है। ईमानदारी।

शनैः शनैः आप देखेंगे कि सभी असाध्य बच्चे ठीक हो जाएँगे। और ये सब इस प्रकार से कार्यान्वित हो जाएगा। आप जानते हैं कि वो मेरे भाषण को नहीं समझ सकते और न ही ये समझ सकते हैं कि मैं क्या कह रही हूँ। परन्तु एक बात निश्चित है कि अन्दर यदि कोई बाधाएँ (Possessions) होंगी तो वो इन्हें दर्शाएंगे, भली भांती दर्शाएंगे–क्योंकि वे अत्यन्त अबोध हैं, अत्यन्त सहज हैं और उनकी अबोधिता उन्हें सच्चाई का बोध कराने में सहायक होगी।

मुझे आशा है कि आप सब अपने बच्चों की देखभाल करते हैं, उचित प्रकार से उनका पथ प्रदर्शन करते है और उन्हें सूझ–बूझ के उस स्तर तक लाते हैं जहाँ वे समझ सकें कि उनकी स्थिति क्या है, उनमें कौन से गुण होने चाहियें और कौन से गुणों से उनका सम्मान होगा? आप हैरान होंगे कि उन बच्चों का आचरण अन्य बच्चों के आचरण को भी बदल देगा।

कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि आपमें से कोई भी ये न सोचे कि आप बड़े हैं, मौन रह सकते हैं और मौन पूर्वक बैठे रह सकते हैं। बड़े तो आप केवल तभी हैं जब आप श्री गणेश के गुणों को आत्म–सात कर सकें। मैंने देखा है लोगों कि आयु बड़ी हो जाती है परन्तु उनमें पावित्र्य एवं ईमानदारी के सहज गुण भी नहीं होते, उनमें ये गुण नहीं हैं, ये गुण वो अपने में ला भी नहीं सकते क्योंकि इन गुणों में उन्हें कोई महत्व ही नज़र नहीं आता। तो मैं यह आप पर छोड़ती हूँ कि अपने अन्दर आप श्री गणेश को खोजें। मैं बच्चों के सहचार्य का आनन्द इसलिए लेती हूँ क्योंकि वे अबोध हैं, और सहज हृदय हैं, बच्चे मुझे बहुत अच्छे लगते हैं।

अतः बच्चों की शरारतों से डरें, घबराएं नहीं। इसके विपरीत, आप समझ लें कि वे कहीं अधिक प्रेम, कहीं अधिक सूझ–बूझ और कहीं अधिक विकास के अधिकारी हैं। मुझे आशा है कि आपकी आयु तक पहुँचने तक वे महान सहजयोगी बन जाऐंगे, हमारे कार्य के महत्व को आप समझेंगे। बड़ी आयु के लोगों की भयानक मूर्खताओं को मुझे झेलना पड़ा। परन्तु इन बच्चों में ये मूर्खताएँ नहीं होंगी, वे अत्यन्त सहज और प्रेम को समझने वाले होंगे।

मैं कहूंगी कि हम इन बच्चों को यहाँ से बाहर जाने दें, कोई एक व्यक्ति बाहर जाकर उनपर नज़र रखे ताकि आप शान्त हो सकें (कोई भी नहीं उठता और बच्चे भी शान्त होकर मंच पर बैठे रहते हैं), इन्हें कौन लेकर जाएगा।

आप मुझे फूल दे सकते हैं, आप यदि फूल लाऐं है तो मुझे दे सकते हैं। बच्चे श्रीमाताजी को फूल देना आरम्भ करते हैं। श्री माताजी बार–बार उन्हें धन्यवाद–धन्यवाद कहती हैं।

बोर्डी - 12-2-1984

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

अपने विवाहों को सफल बनाना आप सब लोगों की बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। पुरुषों से भी कहीं अधिक ये ज़िम्मेदारी आपकी है। आपको इस प्रकार आचरण करना है कि अपने अन्दर आप ऐसा मात त्व एवं अनुशासन उत्पन्न कर सकें जो आप चाहती हैं कि आपके बच्चे आत्मसात करें और जो आपके पति में भी हो। आपने देखा है कि आपकी माँ (श्रीमाताजी) कभी–कभी एक ही स्थान पर लगातार नौ–दस घण्टों तक बैठी रहती हैं उस स्थान से हिलती भी नहीं। परन्तु मैने देखा है कि लोग एक स्थान पर दो घण्टे भी लगातार नहीं बैठ सकते चाहे वे ध्यान–धारणा ही क्यों न कर रहे हों। वो उठ खड़े होते हैं, सबका ध्यान भंग करते हैं और फिर वापिस आते हैं। यह दर्शाता है कि हममें अनुशासन की कमी है तथा हमारे माता–पिता ने हमें अनुशासन नहीं सिखाया और न ही हमने स्वयं को अनुशासित किया। अतः पहली चीज़ ये है कि आपको अपने स्वभाव को पूर्णतः अनुशासित करना होगा। यह इस बात का चिन्ह है कि आप ही लोग प थ्वी माँ के प्रतिनिधि हैं जिनमें विशेष विवेक है। आप सबको अत्यन्त–सावधान रहना होगा कि जो भी कुछ आप करेंगे वह पूरे परिवार तथा पूर्ण सहजयोग प्रणाली में प्रतिबिम्बित होगा। जब आपके विवाह हो जाते हैं तो यह समझने का प्रयत्न करें कि आप प थ्वी माँ हैं और आपने देना ही देना है क्योंकि आपके अन्दर शक्तियाँ हैं, अतः आप दे सकती हैं। इतनी अधिक शक्तियाँ आपमें होने के कारण आपको देना ही है। इसका अर्थ ये हुआ कि एक प्रकार से आप उत्तम हैं कि आप दे सकती हैं। इस कार्य में आपका अहं आपके आड़े नहीं आना चाहिए। ताकि आप ये न कहें कि 'मै क्यों करूं'? 'मैं क्यों यह कार्य करूं? तब आप इस स्त्रीत्व का आनन्द लेने लगेंगी। आप अच्छी माताऐं, अच्छी पत्नियाँ एवम् ज़िम्मेदार सहजयोगिनियाँ बनने का प्रयत्न करें। विवाह के पश्चात् जो महिलाऐं अपने पतियों को सहजयोग से दूर करने का प्रयत्न करतीं हैं वो वास्तव में अत्यन्त अभिशप्त हैं। दूसरों से अत्यन्त मधुरता–पूर्वक बातचीत करें। जो भी कुछ आपने कहना है उसके बारे में अत्यन्त सावधान होना चाहिए। आपको ज़िम्मेदार होना होगा। आप अत्यन्त विशिष्ट लोग हैं कि आपका विवाह सहजयोग में हुआ है। मुझे आशा है कि यह बात आप हमेशा अपने मस्तिष्क में रखेंगी।

गौरी पूजा

गौरी की अपनी ही शक्ति है, इसमें शिव की कोई भूमिका नहीं। ध्यान धारणा करने के समय आपका शरीर आपका दास होना चाहिए। 'यशं' का अर्थ हैं यश तथा रूपं अर्थात मंगलमय–व्यक्तित्व। सहजयोग की पूर्ण भाषावली संघटित (Integrated) है। जब आप कहते हैं 'सफलता' तो इसका अर्थ है 'प्रतिष्ठा' जो कि धर्मपरायणता पूर्वक प्राप्त की गई है। सभी सफल व्यक्ति 'यशस्वी' नहीं होते। संस्कृत भाषा में शब्दों के अर्थ कुछ भिन्न ही होते हैं। तथाकथित सफलता यदि आपने प्राप्त कर भी ली, मान लो कोई व्यक्ति मंत्री बन गया, सभी व्यवहारिक कार्यों के लिए वह अंग्रेज़ी भाषा के अनुसार सफल माना जाएगा। परन्तु संस्कृत भाषा में 'यश' शब्द का अर्थ है प्रतिष्ठा की प्राप्ति, धर्मपरायणता के माध्यम से कमाई हुई प्रतिष्ठा – चारित्रिक प्रतिष्ठा। आवश्यक नहीं कि ऐसा व्यक्ति बहुत वैभवशाली हो या मंत्री के रूप में या प्रधानमंत्री के रूप में बहुत सफल हो।

उसके पास ऐसी सफलता हो जो उसे महान प्रतिष्ठा प्रदान करे जैसे सन्त की प्रतिष्ठा। अतः हमें सहजयोग में उपयोग होने वाले सभी शब्दों को समझना चाहिए। अब 'रूपं' शब्द का अर्थ है सौन्दर्य परन्तु सहजयोग में इसका अर्थ शारीरिक सौन्दर्य न होकर वो सौन्दर्य है जो मंगलमय हो, जिससे आशीष प्राप्त हो सके। ऐसी मुखाक ति जो आशीषदायी हो, अशुभ विचार देने वाली न हो। अतः यह संघटित भाषावली है। इसके एक शब्द के कई–कई अर्थ निकलते हैं। इसलिए भ्रमित नहीं होना चाहिए क्योंकि सौन्दर्य का अर्थ तो सिनेमा अभिनेत्री जैसा होना भी होता है। परन्तु वह सौन्दर्य नहीं है। सौन्दर्य का अर्थ तड़क–भड़क नहीं है, इसका अर्थ है आशीषदायी होना, मंगलमय होना। मुक्तानन्द का अर्थ है कि देवी मुझे योग का वरदान, योग का आनन्द, पूर्ण मुक्ति का आनंद प्रदान करती हैं। मुक्ति अर्थात पूर्ण निर्वाण–निर्वाण का आनन्द।

वे ही मोक्ष का द्वार खोलने वाली हैं, वही मुझे आत्मसाक्षात्कार की भिक्षा प्रदान करेंगी, भिक्षा की याचना करना। अत्यन्त विनम्रता पूर्वक याचना करने का यही तरीका है। क पया मुझे आत्मसाक्षात्कार की भिक्षा दीजिए। माँगने का यह अत्यन्त विनम्र तरीका है। जैसे एक भिखारी कहता है मैं आपसे भिक्षा माँगता हूँ, क पा करके मुझे आत्मसाक्षात्कार दीजिए। मैं आपके द्वारे पर भिखारी हूँ। वे ही नाटक की प्रस्तावना देती हैं, मूक अभिनय वाले नाटक में सारे सूत्र उनके हाथ में हैं। वही 'सूत्रधार' हैं। सारे सूत्र उन्हीं के हाथ में हैं। सारे सूत्र, सारी रस्सियाँ उन्ही के हाथ में होती हैं फिर भी वे हमसे सारा नाटक करवाती हैं। उनकी यही शैली है। ये बात सत्य है। इस बात पर हम सहमत हैं। आप यदि उन्हें प्रसन्न नहीं रखेंगे तो वे पूरे विश्व को नष्ट कर देंगी। अतः हर समय आपने उन्हें प्रसन्न रखना है। महिलाओं को भी यह बात समझ लेनी आवश्यक है। उन्हें अपने पतियों को प्रसन्न रखना है।

कश्मीर त्रिपुरेश्वरी अर्थात सहस्रार। हिमालय, आप जानते हैं, सहस्रार है और कश्मीर हिमालय पर स्थित है। 'त्रिपुर' शब्द के दो अर्थ हैं–एक तो यह कि उन्होंने त्रिपुर नामक भयानक राक्षस का वध किया था और त्रिपुर का दूसरा अर्थ है त्रिलोक, प थ्वी, आकाश और पाताल। वे 'त्रिपुरसुन्दरी' हैं। कहने से मेरा अभिप्राय यह है कि सौन्दर्य शब्द भ्रामक है, इसका संघटन होना आवश्यक है। वे स्वर्ग के द्वार खोलती हैं क्योंकि स्वर्ग में ही आप आनन्द ले सकते हैं। 'पश्य' अर्थात वो आशीष जो आप प्राप्त करने वाले हैं। इस शब्द का उपयोग मेरे लिए किया गया है। आपको जो मिलने वाला है वह है 'माँ का दूध' । आगे वह कहता है कि आप लोग जो परस्पर आत्मा से जुड़े हुए हैं – यह सारा वर्तमान तथा भूतकाल में सहजयोग का वर्णन है।

इस समय पर जो घटित होने वाला है उसे आप प्राप्त करेंगे। आप हैरान होंगे कि अत्यन्त सुन्दरता पूर्वक यह वर्णन किया गया है कि आप सब लोग ब्रह्माण्ड में एक रूप हो जाएँगे। यज्ञों से तथा आप द्वारा किए गए हवनों से ब्रह्माण्ड की आत्मा संतुष्ट हो जाएगी। यह बात कितनी उपयुक्त है। उन्होंने यह बात तीन सौ वर्ष पूर्व कही थी। तब, हमसे संतुष्ट होकर आप हमें अपने आशीर्वाद का क्षीर प्रदान करें। उस समय सभी आसुरी शक्तियाँ तथा आसुरी नियम नष्ट हो जाएँगे तथा लोग धर्मपरायणता अपना लेंगे। तब लोगों में आत्मिक मित्रता स्थापित हो जाएगी। अज्ञानी लोगों को ज्ञान का प्रकाश प्राप्त हो जाएगा। पूरे ब्रह्माण्ड को प्रकाश नज़र आ जाएगा। एक ब्रह्माण्डीय धर्म का सूर्य

दिखाई दे जाएगा। उनकी सभी इच्छाऐं पूर्ण हो जाऐंगी, ऐसे सभी मुनष्यों की। जब आप उनसे (देवी) मिलेंगे तो आशीर्वादों की और, निःसंदेह, चैतन्य की झड़ी लग जाएगी। जब आप उनसे मिलेंगे–वह 'मैं' हूँ..... (तालियों की गड़गड़ाहट)। यह सहजयोगियों का वर्णन है। आप इसे अवश्य सुनें। हज़ारों की संख्या में वे जंगल की तरह से, विशाल पेड़ों वाले चलते फिरते जंगलों की तरह से, आशीष प्रदायी पेड़ों की तरह से वे लोग होंगे। 'कल्पतरु' वह पेड़ होता है जो आपको मनोकामना प्रदान करता है। वे चलते–फिरते जंगलों सम होंगे – अर्थात आप लोग उन्हीं सम महान हैं। आप उन्हीं चलते फिरते महान पेड़ों जैसे हैं जो दूसरों को आशीर्वाद देते हैं और उनकी मनोकामना प्रदान करते हैं। वो लोग अब आप ही हैं। बोलते हुए जीवन्त अम त के सागर, 'जीवन अम त के सागर'। आप वही बोलते चालते जीवन्त अम त के सागर होंगे। जैसे यहाँ ये समुद्र है। समुद्र के अन्दर के पेड़ों को देखें।

'सागर' इस प्रकार से बात करता है कि इससे अम त प्रवाहित होता है, आशीष रूपी अम त। आप ही वही लोग हैं। आप ही दाग रहित चन्द्र की तरह से होंगे। पूर्ण स्वच्छ, बेदाग, कलंक रहित–पूर्णतः कलंक रहित। ताप रहित सूर्य की तरह से। वो लोग आप ही हैं। ऐसे लोग जो धर्मपरायण हो जाएँगे तथा धर्म और सत्य जिनका आधार होगा। वो सब परस्पर जुड़े हुए होंगे। पूर्ण विश्व में वे परस्पर जुड़े हुए होंगे।

उस आरम्भ के साथ, हम महाराष्ट्र के महान सन्तों को जानते हैं। ज्ञानेश्वर जी उनमें से महानतम थे। वे भविष्य द ष्टा थे जिन्होंने आप लोगों के विषय में भविष्यवाणी की और बताया कि परमात्मा के बन्दे पैगम्बर बन जाएंगे तथा उनमें अन्य लोगों को पैगम्बर बनाने की शक्तियाँ होंगी। परन्तु सहजयोगी बनने के बाद भी हमें इस बात का एहसास नहीं होता कि हम क्या हैं? इतनी अच्छी अवस्था पाकर भी हम मूल्यहीन चीज़ों के विषय में चिन्तित रहते हैं। इन सब मूल्यहीन तथा नश्वर चीजों के विषय में, जिनका कोई आध्यात्मिक मूल्य नहीं है, यदि आप सोचते रहें तो आप मात्र अपनी शक्ति नष्ट कर रहे हैं। इस प्रकार अब आप अपना जीवन नष्ट कर रहे हैं क्योंकि अब आप वो बन चुके हैं जिसका वर्णन महान सन्तों ने किया है – अम त के बोलते–चालते सागर–अम त के सागर। वो अम त नहीं जो हम जानते हैं। यह आध्यात्मिक आशीर्वाद का अम त है। जब आप वह बन गए हैं तो अपने विषय में आपसे क्या आशा की जाती है। इसका पता लगएं, स्वयं पता लगाएँ, अन्तरअवलोकन करें कि अपने बारे में मुझसे क्या आशा की जाती है और इस दिशा में मैं क्या कर रहा हूँ? मैं एक व्यर्थ की चीज़ के लिए चिन्तित हूँ, दूसरी व्यर्थ की चीज़ के लिए चिन्तित हूँ, और मुझे होना चाहिए आध्यात्मिक अम त का सागर! मुझे तो कल्पतरुओं का जंगल होना चाहिए, उन व क्षों का जो लोगों को वरदान देते हैं, महान विजयें प्रदान करते हैं। परन्तु मैं क्या कर रहा हूँ? मेरा तो चित्त भी ऐसा नहीं है जो परमेश्वरी ऊर्जा को आत्मसात कर सके! चित्त ऐसा होना चाहिए कि मैं परमात्मा की इच्छा को आत्मसात कर सकूं। परन्तु ऐसा होने के स्थान पर मेरा चित्त तो गलत चीजों पर है और मैं कर क्या रहा हूँ? अपने (उत्थान के) लिए मैं क्या करता हूँ? क्या उस विशेष गुण की अभिव्यक्ति करने की योग्यता मुझमें नहीं है? उस उच्चतम गुण की। मैं जिस रूप में अब हूँ युगों के बाद मैंने जन्म लिया है। बहुत बार मेरा जन्म हुआ । मैं सन्त था और हमेशा परमात्मा की खोज में भटकता रहा, हमेशा मैं इस खोज में

भटकता रहा और इस जीवन में जब ये महान कार्य करने के लिए मेरा जन्म हुआ है एक बार फिर मैं उन्हीं मूर्खताओं में फँस गया हूँ। उन्हीं मूर्खताओं को लिए मैं घूम रहा हूँ। यह बात जब आप समझ जाएँगे तब आप ये जान जाएँगे कि आज हमारी इस अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी के अवसर पर इसका क्या महत्व है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आप सभी परस्पर सम्बन्धित हैं किसी अन्य से आपका कोई सम्बन्ध नहीं। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर आप एक दूसरे से सम्बन्धित हैं और ये सम्बन्ध गहन मित्रता के सम्बन्ध है। इसमें पक्षपात, कामुकता, लोभ आदि का कोई स्थान नहीं होता ये केवल मित्रता है, यह शुद्ध मित्रता है और हम वही हैं। तो ये कहना उचित होगा कि यह केवल प्रेम है, स्नेह है, अच्छाई है और यह केवल माधुर्य है। परन्तु आपको समझ लेना होगा कि आपने उस स्तर तक उठना है । ये पेड़ वातावरण से, पूर्ण वातावरण से लम्बा संघर्ष करने के बाद इस स्तर तक पहुँचे हैं। प थ्वी माँ, जिससे ये जुड़े हुए हैं, की सहायता के अतिरिक्त ये अपने ही बलबूते पर उन्नत हुए हैं। अतः आप लोगों को समझ लेना चाहिए कि स्वयं से लड़कर इस बात का पता लगाएँ कि आपमें क्या कमी है तथा स्वयं को उन्नत करें।

सर्वप्रथम देखें कि आपका चित्त कहाँ है? चित्त की गति ऐसी होनी चाहिए कि यह बाह्य रूप से उन्नत हो और आंतरिक रूप से माँ (श्री माताजी) के प्रति पूर्ण सम्मान पूर्वक जुड़ा रहे। जो लोग ये कार्य नहीं कर सकते वो लोग व्यर्थ हैं। जिस पेड़ ने मज़बूती से प थ्वी माँ को पकड़ा नहीं है वह गिर जाएगा। कहने से अभिप्राय यह है कि जैसा वह करता है वैसा ही उसे फल प्राप्त होता है। प थ्वी माँ ने इससे कुछ नहीं लेना–देना। प थ्वी माँ का ये विशेष गुण है और यदि आप पूर्ण निष्ठा एवं निरन्तर एकरूपता पूर्वक प थ्वी माँ से जुड़ नहीं जाते तो म त पेड़ की तरह से आपका भी पतन हो जाएगा। अतः ये समझ लेना अत्यन्त महत्वपूर्ण है कि आप महान हैं, इसमें कोई सन्देह नहीं। ये पेड़ महान हैं, संघर्ष करके ये उन्नत हुए हैं। परन्तु आपका चित्त कहाँ हैं? आप यहाँ किस लिए हैं? आवश्यकता किस चीज़ की है? उत्थान में बाधक चीज़ों से चिपके रहने की? उन चीज़ों से चिपके रहने की जो हमेशा आपके विरूद्ध होती हैं।

उत्थान मार्ग में हमारे लिए सबसे बड़ी बाधा हमारा मूर्खतापूर्ण अहम् है। यह बात हमें समझ लेनी है कि अहम् हमारे अन्दर सबसे बड़ी रुकावट है। हमें इसके चंगुल से निकलना होगा। कुण्डलिनी को भी इन्ही पेड़ों की तरह से उठना होगा परन्तु हम सबमें, अधिकतर लोगों में अहम् सबसे बड़ी बाधा है। यह बहुत तरीकों से दिखाई देता है। जीवन की सभी उपलब्धियाँ प्रदान करने वाली प थ्वी माँ से ही हम लड़ते हैं। आप प थ्वी माँ की ही देन हैं। उसने ही आपका स जन किया है, आपको बनाया है, उन्हीं की क पा से आप उन्नत हुए हैं। परन्तु आप उसी से लड़ रहे हैं और उसी के विरूद्ध कार्य कर रहे हैं! यह गलत है। आप किस प्रकार चलेंगे? एक बार जब आप उन्नत होने लगेंगे सूर्य आपकी सहायता करेगा, प्रक ति आपकी सहायता करेगी। परन्तु आपको अपनी तुच्छता से, अपने स्वार्थो से, अपने बन्धनों से और विशेषरूप से अपने अहम् से अपर उठने की द ढ़ इच्छा होनी आवश्यक है। जब हम आपकी तारीफ करते हैं तो आपको फूल कर कुप्पा नहीं हो जाना। मान लो कि मैं कहती हूँ कि आप एक छोटे पेड़ हैं जो बहुत बड़ा पेड़ बन जाएगा तो इसका अर्थ ये नहीं है कि पेड़ बड़ा हो गया है। आप संभी को संघर्ष करके वह विशालता प्राप्त करनी होगी परन्तु उसके लिए

आपको अपने में श्री ज्ञानेश्वर, तुकाराम तथा रामदास जैसे सन्तों के गुण विकसित करने होंगे। उन्होने कभी मुझे नहीं देखा, बिना मेरे दर्शन किए ही मैने उनका पोषण किया परन्तु उन्होंने अपनी महानता से ही स्वयं को पोषित किया। आपको भी वैसा ही महान होना होगा। इसकी अपेक्षा आप तो अपने विषय में मिथ्या विचारों, क त्रिमताओं, हास्यास्पद धारणाओं आदि में ही जिए जा रहे हैं। उन सारी मूर्खताओं से चिपके हुए हैं जो आपने अपने पालन–पोषण, राष्ट्रीयता, पढ़ाई–लिखाई, गुरुओं तथा मानसिक प्रक्षेपणों के माध्यम से एकत्र की हैं। इन दुर्गुणों के साथ तो हम सभी सहजयोगियों के लिए अत्यन्त ही भयानक साबित हो सकते हैं और इसका प्रभाव सामूहिकता पर भी पड़ सकता है।

अतः आज हमें शपथ लेनी होगी कि हमारा व्यवहार ऐसा होगा जो हमारे, किसी अन्य की नहीं, अवतरण (पद) को शोभा दे। इस समय पर हमारा अवतरित होना जिसकी भविष्यवाणी और वर्णन किया गया है, यह भविष्यवाणी बहुत समय पूर्व की गई थी। अगर हम ये समझ लें कि हम उसी लक्ष्य के लिए प थ्वी पर आए हैं तो हम वास्तव में स्वयं को सभी प्रचलित मूर्खताओं से प थक कर लेंगे और इन पेड़ों की तरह से आकाश की ओर उठने का प्रयत्न करेंगे। उत्थान–विरोधी गतिविधियों में किसी अन्य सहजयोगी का अनुसरण आपको नहीं करना चाहिए। कोई यदि किसी प्रकार का भूत बनाने की या आपको यह कहकर कि वह आपको कुछ ऊँचा या बड़ी बात सिखा सकता है, या कोई अन्य तकनीक बता सकता है और इस प्रकार यदि कोई प्रभावित करने का प्रयत्न करे तो आप उस पर विश्वास न करें।

सर्वप्रथम ये बात समझ लें कि सहजयोग आन्तरिक उत्क्रान्ति है जो बाहर की ओर अपनी अभिव्यक्ति करती है। अतः पूर्ण सूझ–बूझ से आन्तरिक उत्क्रान्ति प्राप्त करनी है। तब मुझे आपको किसी के विषय में बताना नहीं पड़ेगा। तब आप पर इन बेवकूफी भरी बातों और बकबक का कोई प्रभाव न होगा। आपमें से कुछ लोग बुद्धिवादी हैं, बुद्धिवादियों में हर चीज़ को बौद्धिक रूप देने की बुरी आदत होती है। परमात्मा की द ष्टि में बुद्धिवाद कुछ भी नहीं है, क्योंकि परमात्मा ने ही उसका स जन किया है। अतः आपको सावधान रहना होगा।

कुछ लोग अत्यन्त भावुक होते हैं और अत्यन्त भावुकता पूर्वक अपनी अभिव्यक्ति करने का प्रयत्न करते हैं। आपको उन धारणाओं से बाहर आना होगा और समझना होगा कि जीवन की भावनाओं की बहुत भयानक भूमिका हो सकती है।

बोर्डी में हमने बहुत से विवाह करने का निर्णय किया है। यह बहुत अच्छी और मंगलमय बात है। इतने सारे विवाह होंगे इसकी मुझें बहुत प्रसन्नता है कि इतने सारे विवाह हो रहे हैं। यह बहुत ही शुभ है क्योंकि विवाह को परमात्मा का आशीर्वाद प्राप्त होता है। आप लोग विशेष हैं क्योंकि इन विवाहों के लिए मैं आपके सम्मुख बैठी हूँ। इनका बतंगड़ न बनाएँ। छिछोरे बनकर समस्याएँ न खड़ी करें। यह 'ब्रह्मएक्य' विवाह हैं, जिस स्थिति में व्यक्ति आत्मा से एकरूपता महसूस करता है, सर्वव्यापी शक्ति से तादात्मय होता है। यह समझने का प्रयत्न करें। ये विवाह संतों के मध्य हो रहे हैं, सामान्य लोगों के बीच नहीं। व्यक्ति के आन्तरिक गुणों का सम्मान करें। कोई यदि उच्च दर्जे का सहजयोगी है तो उसका सम्मान होना चाहिए, उसे प्रेम किया जाना चाहिए। बाह्य गुणों को अधिक महत्व नहीं दिया जाना चाहिए क्योंकि बाह्य गुण तो मात्र मूर्खता होते हैं। विवाह के पश्चात् पति–पत्नी को एक दूसरे का सम्मान करना चाहिए क्योंकि

आप लोग सन्त है–उच्च दर्जे के सन्त। जैसा मैने आपको बताया आपमें महान सम्भावनाएँ छुपी हुई हैं। उस बात का पहले से ही वर्णन किया गया है कि अपनी स्थिति में स्थापित होने से ही आपकी महानता स्थापित होगी आप महान बन सकेंगे।

अब मैं हिन्दी में थोड़ा सा आपको बताना चाहती हूँ कि सहजयोग में हम लोग अब ये नहीं जानते कि हमारे बारे में हजारों वर्ष पहले ये बताया गया था कि ऐसे महान लोग संसार में आयेंगे और पहाड़ के पहाड़, ऐसे बड़े–बड़े व क्षों के बड़े–बड़े अरण्य संसार में घूमेंगे, जो बोलते हुए, चलते हुए, दुनिया को उनकी इच्छाओं की पूर्ति के कल्पतरु जैसे उनके आशीर्वाद देंगे और एक–एक व्यक्ति में जैसे सागर उमड़ते हैं, जिसमें की अम त बोलता है। ऐसे सागर, ऐसे सूरज होंगे–चमकते हुए सूरज जिनके अन्दर कोई भी अग्नि नहीं, ऐसे चन्द्रमा जिनके ऊपर कोई कलंक नहीं। ये आपके वर्णन हजारों वर्ष पहले ज्ञानेश्वर जी ने किए कि कितना आपका महत्व उन्होंने बताया, कि कितना जरूरी है–सारी दुनिया के लिए। सारी दुनिया के लिए एक आशा है।

पूरा विश्व इस घटना के घटित होने की आशा कर रहा है कि ऐसे लोग प थ्वी पर अवतरित हों जिनके विषय में वर्णन किया गया है।

इस तरह से हो रहा है, और हो गया है। लेकिन अभी इसकी प्रगति, मेरे विचार से, बहुत धीमी है। इसकी प्रगति बहुत धीमी है। प्रगति आपकी वजह से धीमी हो जाती है। ऐसी जगह चित्त आपका जाता है जहाँ हम अपने को गिरा लेते हैं। अपना चित्त इस पेड़ का जैसा इस प थ्वी से पूरी तरह से निगड़ित है, ऐसा आपको अपनी माँ के साथ निगड़ित करना चाहिए और उसकी जो ऊँचाई है, उसके ओर द ष्टि होनी चाहिए। ये ऊँचाई जो भी इन्होंने हासिल की है, वो इस वातावरण से लड़ कर, झगड़ कर, बाहर आकर, अपना सर ऊँचा उठा कर के। जो लोग अपना सर दुनियाई चीज़ों के लिए, क त्रिम चीज़ों के लिए, बाह्य चीज़ों के लिए झुका लेते हैं वो कैसे उसे पा सकते हैं? या जो अपना चित्त इस धरती माँ से हटा लेते हैं वो तो मर ही जाएँगे। इसलिए हर सहजयोगी का ये कर्तव्य है, ये पूरी तरह से कर्तव्य है कि वो जाने कि सारी दुनिया आपकी तरफ आँख लगाए बैठी हुई है और आप अपने गौरव को पहचानें।

पूरा विश्व आपकी उन्नति को देख रहा है और यह घटित होने की आशा कर रहा है। पूरे विश्व में इसकी घोषणा हो चुकी है परन्तु हम कहाँ है? हमारी उन्नति बहुत धीमी है। छोटी छोटी भौतिक, सांसारिक, सतही एवं बनावटी मूर्खता पूर्ण चीज़ों की हम चिन्ता करते हैं। पूरा विश्व इसकी घोषणा कर चुका है। अतः व्यक्ति को समझना है। आज आप लोग यहाँ इस अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी में मुझे वचन देने के लिए आए हैं।

आप लोग यहाँ मुझे वचन देने आए हैं इस अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार (संगोष्ठी) पर कि माँ आप जितनी मेहनत करते हो उसी तरह से हम भी मेहनत करेंगे।

इस पूजा में आए सभी लोग आयु में मुझसे छोटे हैं। आप सभी लोगों को मुझे वचन देना होगा कि श्रीमातीजी हम भी उसी जोश तथा उसी तल्लीनता से सहजकार्य करेगें जिस प्रकार आप करती हैं तथा स्वयं को स्थापित करने का प्रयत्न करेंगें। स्वयं को हम शान्त करेंगे। हम बोलते बहुत अधिक हैं, बातें बहुत अधिक हैं परन्तु करते कुछ भी नहीं। आन्तरिक मौन द्वारा अपनी शक्ति के ह्रास को बचानें का प्रयत्न करें।

उस शान्तिमय गौरव में अपने को उतारें।

अपने बारे में पूरी कल्पना होनी चाहिए कि आप हैं क्या। आपको पूरा ज्ञान होना चाहिए कि आप क्या हैं? इस बात की आपको समझ होनी चाहिए कि किस लक्ष्य को लेने के लिए आप चले थे और इसकी प्राप्ति के लिए क्या किया। यह इस प्रकार कार्यान्वित नहीं होगा। सभी कुछ अच्छा है। भविष्य बहुत आनन्दमय प्रतीत होता है। हर चीज़ बहुत अच्छी प्रतीत होती है। परन्तु सबसे बड़ी चीज़ तो आपकी माँ की आशा है कि आप पूरे विश्व का उद्धार करेगें। इस बात की ओर ध्यान दें। ये सोचें कि आपने यह कार्य करना है। आप ही लोग चलते, बोलते, घूमते, परमेश्वरी प्रेम के जंगल हैं, वह ऋतम्भरा प्रज्ञा हैं। मुझे आशा है कि आप इस बात को समझेंगे कि आज अत्यन्त महत्वपूर्ण दिन है और मुझे लगता है कि यह सत्र यदि ठीक प्रकार कार्यान्वित होता है तो सम्भवतः अगले सत्र तक हम बहुत बड़ी उपलब्धि प्राप्त कर लें।

आप सबसे मेरी यही विनती है कि निष्ठा पूर्वक ध्यान धारणा करें। आज हमें पूजा करनी है। इस समय एक बहुत बड़ा स्रोत खोला जाना है। परन्तु इसका प्रवाह लोगों में होना चाहिए। परन्तु मिथ्या अंहकार, मूर्खता तथा छोटे – छोटे पागलपनों से भरे हुए लोगों में से इस अम त का संचार कैसे कर सकते हैं? आपको विशाल ह्रदय महान व्यक्ति होना होगा। आप सब द्विज (Born Again) हैं जो एक बार पुनः महान हैं। परन्तु आप तो अपने वातावरण से प्रभावित हैं। अतः अपने और समय के महत्व को समझने का प्रयत्न करें। यह समय अपनी पूजा करने का है, परन्तु पूजा के योग्य भी होना होगा। आप समझते हैं कि अच्छे वस्त्र पहनने से या किसी प्रकार का दिखावा करने से हम पूजनीय बन जाते हैं तो यह बात ठीक नहीं है। हमें स्वयं के लिए पूजनीय होना चाहिए। जो भी कुछ हम कर रहे हैं उसमें सन्तों की गरिमा, सौन्दर्य, प्रेम तथा महानता होनी चाहिए, महान सन्तों की, साधारण लोगों की नहीं। वास्तव में इसका वर्णन किया जा रहा है। ज्ञानेश्वर जी ने अपनी कविता में वास्तव में आपकी पूजा की है। काश हमारे यहां ज्ञानेश्वर जी जैसे लोग होते। परन्तु वे सब मेरे शरीर में स्थापित हैं। आप लोग मेरे शरीर से बाहर हैं। अतः उन्होने (सन्तों ने) जो कुछ कहा है उसे आपने पूर्ण करना है। केवल इतना ही नहीं ज्ञानेश्वर जी ने जो कुछ भी कहा था वह सत्य है।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

निर्मल विद्या

सारे परमेश्वरी कार्य, क्षमा करना भी, जो हम करते हैं वे सब एक विशिष्ट शक्ति द्वारा करते हैं। जब आप कहते हैं, "श्री माता जी, हमें क्षमा कर दीजिए।" जिस तकनीक से मैं आपको क्षमा करती हूँ वह 'निर्मल विद्या' है। जिस तकनीक से मैं आपको प्रेम करती हूँ वह भी निर्मल विद्या है। जिस तकनीक से मैं आपको प्रेम करती हूँ वह भी निर्मल विद्या है। जिस तकनीक से सभी मन्त्रों की अभिव्यक्ति होती है तथा वे प्रभावशाली होते हैं वह भी 'निर्मल विद्या' है।

'निर्मला' अर्थात् पावन, विद्या का अर्थ है ज्ञान। निर्मल विद्या' इस तकनीक का पावनतम ज्ञान है। यह छल्लों (Loops) का स जन करती है। यह शक्ति छल्लों का स जन करती है तथा कई भिन्न आकारों की रचना करती है जिनके द्वारा यह गतिशील होती है और सभी आवांछित एवं अपवित्र तत्वों को खदेड़ कर अपनी शक्ति से स्वयं को परिपूर्ण कर लेती है। ये एक तकनीक है, 'दिव्य तकनीक' जिसको मैं आपके सम्मुख शायद पूरी तरह से वर्णन न कर सकूं क्योंकि आपका यन्त्र (शरीर) अभी तक ये कार्य नहीं करता–आपके पास वैसा यन्त्र नहीं है।

आप देखिए कि ये कितनी सूक्ष्म है! 'निर्मल विद्या' उच्चारण मात्र से आप इस शक्ति को, पूरी चीज़ को, पूरी तकनीक को निमंत्रण देते हैं कि वह आकर आपकी देखभाल करे और यह आपकी देखभाल करती है, आपको चिन्ता नहीं करनी पड़ती। किसी भी सरकार में या विश्व में, कहीं अन्यत्र, ऐसा घटित नहीं होता। आप सरकार का आह्वान करें और सभी कुछ कार्यशील हो उठे, पूरे ब्रह्माण्ड में, पूरी स ष्टि में। इस तकनीक को निर्मल विद्या कहते हैं। एक बार इसके प्रति समर्पित होकर यदि इसमें कुशलता प्राप्त कर लीजिए तो यह पूरी तरह से आपकी आज्ञा का पालन करती है। परन्तु यह गणेश शक्ति है, 'अबोधिता' की शक्ति, इसे 'अबोधिता' (innocence) कहा जाता हैं। पूरी शक्ति, क्योंकि यह अबोधिता है अतः अबोधिता कार्यभार सम्भालकर सभी कुछ चलाती है। इस प्रकार से यह कार्यान्वित होती है।

तत्पश्चात् यह उन्नत होती चली जाती है और 'पराशक्ति' कहलाती है 'शक्ति से परे'। तत्पश्चात् ये मध्यमा आदि बन जाती है। जब यह बाईं विशुद्धि पर आती है तो व्यक्ति में दोष भाव आ जाता है। अपनी दोष भावना के कारण आप कहते हैं कि चीज़ें बड़ी कठिन हैं। बाईं विशुद्धि गणेश शक्ति की पकड़ होती है। गणेश माधुर्य हैं। श्री गणेश को देखने मात्र से ही ये कौतुक, यह पावन प्रेरणा बहने लगती है। उनके बारे में सोचने मात्र से ही आप प्रसन्न हो जाते हैं। बाईं विशुद्धि पर अबोधिता कठोर हो जाती है। अतः बाईं विशुद्धि की पकड़ को दूर करने के लिए आप सबको मधुर शब्द उपयोग करने चाहिएं। सबके प्रति आपकी भाषा अत्यन्त मधुर होनी चाहिए। विशेष रूप से पुरुषों को चाहिए कि अपनी पत्नियों से बहुत मधुर बोलें। यह माधुर्य आपकी बाईं विशुद्धि को ठीक करेगा। हमेशा बहुत मीठा बोलें। मीठे शब्द खोजने का प्रयत्न करते रहें। मधुर शब्द, दोष भाव को सुधारने का सर्वोत्तम उपाय हैं। क्योंकि यदि आप किसी को कठोर शब्द कहते हैं तो हो सकता है कि आप आदतवश ऐसा कर रहे हों या इससे आपको प्रसन्नता मिलती हो। तुरन्त ज्योंही आप कठोर शब्द बोलते हैं उसके तुरन्त बाद आप कहते हैं कि, "हे परमात्मा, मैंने यह क्या कह दिया!" यह सबसे बड़ा दोष है। व्यक्ति को सदैव मधुर शब्द खोजने का प्रयत्न करते रहना चाहिए। जिस प्रकार यह पक्षी चहचहा रहे हैं इसी प्रकार आपको भी सभी चीजों के स्वर सीखने चाहिए जिनके द्वारा आप लोगों को

प्रसन्न कर सकें। ऐसा करना बहुत आवश्यक है। अन्यथा यदि आपकी बाई विशुद्धि की पकड़ बहुत अधिक बढ़ गई तो आपमें बातचीत करने की ऐसी विधि उन्नत हो जाएगी जिससे आपके होंठ बाईं ओर को खिंच जाएँगे।

तत्पश्चात् प्रसार (चैतन्य) ऊपर को जाने लगता है, आज्ञा चक्र में, जहाँ गणेश शक्ति क्षमा की महानतम शक्ति बन जाती है। इसके बाद यह मस्तिष्क क्षेत्र में प्रवेश करती है जहाँ गणेश शक्ति सूर्य से ऊपर जाती है। प्रतिअहम् प्रकट होता है और यह चन्द्र की शक्ति है और यह चन्द्र आत्मा है। आत्मा बनकर यह सदाशिव के सिर पर बैठ जाती है। यह वही शक्ति है। गणेश शक्ति का पूर्ण विकास अत्यन्त सुन्दर है। इस प्रकार से हमारी इच्छा ही आत्मा बन जाती है, आपकी इच्छा और आत्मा एकरूप हो जाते हैं। परन्तु कभी–कभी यह बाधा बहुत बुरी हो सकती है। आपने देखा है कि जिन लोगों में बाईं विशुद्धि की पकड़ है वो जब कठोर बोलते हैं तो उन्हें यह बात समझ लेनी चाहिए कि यह आप नहीं बोल रहे। कौन बोल रहा है? नहीं, क्योंकि आप आत्मा हैं और आत्मा कोई भी कठोर या विध्वंसक बात नहीं बोल सकता। किसी को सुधारने के लिए यदि बहुत आवश्यक हो तभी वह कुछ कठोर कहेगा। परन्तु आप इसकी (सुधारने की) ज़िम्मेदारी न लें, यह कार्य कोई अन्य कर देगा।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें!

मैं ही आदिशक्ति हूँ

न्यूयार्क, 30-09-1981

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

ग्रन्थों में इस बात का वर्णन है कि ईसामसीह को सूली पर चढ़ाने वाले लोग पुनर्जन्म लेते रहते हैं और बार–बार क्रूसा रोपण करते हैं। क्रूसा रोपण (crucifixion) ईसामसीह का संदेश नहीं है। यही कारण है कि क्रास पहनने वाले लोग मुझे पसन्द नहीं हैं। मै उन्हें देख भी नहीं पाती। क्रास उनका सन्देश नहीं है। निःसन्देह यदि क्रास पहना हुआ हो तो बुरी आत्माएं दौड़ जाती हैं। परन्तु यह एक असहनीय घटना की याद दिलाता रहता है। उनकी माँ में सभी शक्तियाँ थी। वे महालक्ष्मी थीं। उनमें भी ग्यारह शक्तियाँ थी–ग्यारह विध्वंसक शक्तियाँ। आप इसकी कल्पना कर सकते हैं! क्रूसारोपित होते हुए भी उनमें यह शक्तियाँ विद्यमान थीं। परन्तु बिना कोई विध्वंस किए वे क्रूसारोपित हो गए। इस बात का उन्होंने ध्यान रखा।

अब लोग प्रश्न कर सकते हैं, "ईसामसीह पुनर्जीवित किस प्रकार हुए?" सर्वप्रथम तो लोगों ने 'निष्कलंक गर्भाधारण' (Immaculate conception) पर भी एतराज किया। कहने का अभिप्राय है कि लोगों को हर चीज़ पर एतराज़ है। ईसामसीह मानव नहीं थे। वे परमेश्वरी शक्ति थे। मैं आप लोगों को अपने हृदय में धारण करती हूँ। आप जानते हैं कि अपनी कुण्डलिनी को उपयोग करके मैं तुम्हें अपने हृदय मे स्थान देती हूँ और फिर हृदय से ही आपको जन्म देती हूँ। जिस प्रकार से आपको दूसरा जन्म प्राप्त हुआ है इसी प्रकार से ईसामसीह भी निष्कलंक थे। उनकी माँ नें उन्हें हृदय में धारण किया और फिर अपने गर्भ में और तत्पश्चात् उन्हें जन्म दिया। ईसामसीह पर सन्देह करना और उनके विरुद्ध बातें करना आसान है क्योंकि अब वे प थ्वी पर नहीं हैं। यहूदियों को सबक लेना चाहिए। एक बार उन्हें नकार कर यहूदियों को कष्ट भुगतने पड़े। अतः अब उन्हें चाहिए कि ईसामसीह को न नकारें। परमेश्वरी शक्ति की प्रतिमूर्ति को आप नकार नहीं सकते। ईसाई लोग गलत हो सकते हैं। उन्होंने यदि आपको सताया है तो आप उन्हें क्षमा कर दो। वे भी तो आप ही जैसे हैं – धर्मान्ध, धर्मान्ध, धर्मान्ध। वो चाहे इसाई हैं या मुसलमान हैं, सभी लोग अन्य लोगों जैसे हैं। मुझें कोई अन्तर नहीं दिखाई देता। कट्टर, अज्ञानी और धर्मान्ध। उन लोगों को क्षमा कर दें। (Matthew-II) मैथ्यु–II के दूसरे अध्याय में ईसामसीह ने स्वयं कहा था कि आप मुझे पुकारेंगे–ईसा, ईसा, ईसा, परन्तु मैं आपको नही पहचानूँगा कि आप कौन हैं। हम लोग जो ईसा का नाम लेते हैं वे ईसा के स्वनियुक्त प्रतिवक्ता हैं। हम ही लोग ईसामसीह के अधिकारी बनते हैं। ऐसे सभी लोगों पर अभियोग चलाया जाएगा और जिस प्रकार उन्होंने ईसा–मसीह के मामलों को सम्भाला है, उन्हें नर्क में धकेला जाएगा। उनमें से कुछ लोग सच्चे हैं क्योंकि उन्हें इस बात का ज्ञान ही नहीं कि ये सारी बात बनावटी है। वे सच्चे हैं, परन्तु उन्हें आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करना होगा। उन्हें आत्म–साक्षात्कार माँगना चाहिए तथा ईसा–मसीह को समझना चाहिए। उन्हें चाहिए कि अपने हृदय में ईसा–मसीह को जाग त करें।

मै आपको बता रही थी कि ईसामसीह ने कहा था कि आपको पुनर्जन्म लेना होगा, कि मुझे आपके हृदय में जन्म लेना होगा। अब हृदय चक्र यहाँ पर है और यहाँ पर भी (हृदय, सहस्रार)। क्योंकि हृदय को तालूरन्ध्र पर स्थापित चक्र (सहस्रार) ही नियन्त्रित करता है। और जब उन्होंने यह कहा कि आपको उन्हें अपने हृदय में स्थापित करना होगा तब उन्होंने यही बात कही थी कि आपको अपना आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करना होगा।

बहुत से देशों के लोग जिनमें आपके देश के लोग भी थे, भारत गए, परन्तु उन्होंने ये कभी नहीं बताया कि ईसामसीह के रूप में महाविष्णु ही अवतरित हुए थे। पुराणों में पहले से वर्णित है कि वे ही आधार हैं। एक बार कुण्डलिनी द्वारा जाग त किए जाने पर आपके सभी कर्मफल समाप्त हो जाएँगे, इन लोगों ने जाकर कभी नहीं बताया। अतः भारतीय लोग कर्म के सिद्धान्त को लेकर गए और ये गुरु आपको कर्म सिखाने के लिए यहाँ आए। आश्चर्य की बात है कि आप इन मूर्खतापूर्ण सिद्धान्तों को कैसे स्वीकार करते हैं! जैसे ये लोग कहते हैं अपने दुष्कर्मो के कारण आपको कष्ट उठाने होंगे। फिर ये कहते हैं कि संतुलन से चलें और संतुलित रहें। यदि आपको एक अति में जाना है या दूसरी में तो ये लोग क्या कर रहे हैं? ये लोग काहे के भाषण दे रहे हैं? जब ये कुछ कर ही नहीं सकते तो इन्हें अपने मुँह बन्द रखने चाहिएं। ये आपको आत्म साक्षात्कार नहीं दे सकते, उस स्थिति से आपको बचा नहीं सकते तो बेहतर होगा कि ये कष्ट भुगतें। ये क्यों कहते हैं, कि आपको कष्ट उठाने चाहिएं? उन्हें ऐसा क्यों कहना चाहिए? क्योंकि आपको कष्ट भुगतते देखकर उन्हें आनन्द आता है। आनन्द लेने के लिए वे चाहते हैं कि आप लोग कष्ट उठाएं। बहुत सारे लोग जो इन भयानक गुरुओं के शिष्य थे, जिन्होंने कहा कि अपने कर्मो के फलस्वरूप आपको कष्ट उठाने होंगे, इन लोगों ने मुझे बताया कि उन्होंने इन गुरुओं को उनका मज़ाक उड़ाते हुए, उन पर हँसते हुए देखा है। इन्होंने मुझे इन गुरुओं के फोटो भी दिखाए जिनमें अपने गुरूओं के सम्मुख शरीर और मन से कष्ट उठाते हुए इन मूर्ख शिष्यों पर ये लोग मज़ाक कर रहे हैं। इस प्रकार ये दोहरा लाभ उठाते हैं, एक तो धन और सत्ता का लाभ और दूसरा आप लोगों की हत्या करने का तथा नष्ट करने का लक्ष्य पूरा करने का, क्योंकि अपने फरेब, मिथ्याचार द्वारा उन्होंने आपको अपनी पकड़ में लिया है। परमात्मा के ये तथाकथित बन्दे उनके मिथ्याचार से प्रभावित हैं। अब देखिए कि इस सभागार में यदि कोई कुगुरु होता तो ये खचाखच भर गया होता, सड़क पर जाम लग गया होता। परन्तु मैने देखा है कि केवल यहीं नहीं, कहीं भी कोई सच्चा गुरु यदि होगा तो कार्य बहुत ही धीमे से आरम्भ होगा। निःसन्देह किसी स्थान के लोग यदि अत्यन्त सहज और संवेदनशील हैं तो बात दूसरी है परन्तु शहरों के लोग वास्तविकता के प्रति इतने संवेदनहीन हैं तथा आसुरी प्रव त्ति के प्रति इतने संवेदनशील कि जिस प्रकार वे असुरों के सानिध्य में आते हैं तथा वास्तविकता से परे होते हैं, उस पर आश्चर्य होता है।

आप क्योंकि अवास्तविकता में फँसे हुए हैं, अतः आपको वास्तविकता में आना होगा। अतः आपको समझना होगा कि आपको आत्मा बनना है, आत्मा जो कि आपके मध्य नाड़ी तंत्र पर, आपकी चेतना में अभी तक प्रकाशमान नहीं है। इसी आत्मा का वर्णन किया गया है। इससे पूर्व चर्चो में कभी इसकी बात नहीं की गई थी। परन्तु आज पहली बार मैं चर्च में ईसा–मसीह की बात कर रही हूँ और मुझे आज प्रसन्नता है कि चर्च में भी इसकी स्थापना हो पाएगी और जब लोग यहाँ आएँगे तो, मुझे आशा है, उन्हें आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हो जाएगा। यहाँ कुछ न कुछ कार्यान्वित हो जाएगा और लोगों को जाग ति प्राप्त हो जाएगी। क्योंकि मेरे सम्मुख बहुत से सन्त बैठे हैं, सम्भवतः इस चर्च में एक दिन ऐसा आएगा जब यह कार्यान्वित हो जाएगा तथा लोग आत्म–साक्षात्कार प्राप्त कर लेंगे।

ईसा–मसीह का जीवन केवल तीन चार वर्ष का था, इससे अधिक उन्हें जीवित रहने ही नहीं

दिया गया। जो भी सम्भव था वह किया गया। परन्तु लोग इतने मूर्ख हैं, इतने मूर्ख हैं कि आप उनसे बात भी नहीं कर सकते और इन्हीं लोगों ने उनकी हत्या कर दी, वे इनसे बात भी नहीं कर सके और इस प्रकार से उनके जीवन का अन्त हो गया। परन्तु अपने छोटे से जीवन में वे कितनी बड़ी चिंगारी थे, कितनी बड़ी चिंगारी! जिस प्रकार से लोगों ने उनसे व्यवहार किया वह अत्यन्त न शंस था। ये बात मैं अवश्य कहूँगी कि धर्म–प्रचारक स्वयं, मैथ्यू आदि भी इतने बुद्धिवादी थे, इतने बुद्धिवादी कि वे निष्कलंक गर्भधारण की धारणा को स्वीकार ही नही कर सके। अत्यन्त ही कठिन व्यक्ति, इसके विषय में वह वाद विवाद किया करता था। उसने कहा, "कि यदि कोई कुंआरी बच्चे को जन्म दे तो कोई भी व्यक्ति यह कहने से नहीं चूकेगा कि यह ईश निन्दा है, अत्यन्त गैर कानूनी है और इसके विषय में बात भी नहीं की जानी चाहिए। भयानक व्यक्ति, एक से बढ़कर एक, बड़े ही अजीब ढंग से उन्होंने इस बात को लिया क्योंकि वो अतिचेतन (Supraconscious) व्यक्ति थे। उन्होंने बहुत से असुरों की भाषा बोलनी शुरु कर दी। बाइबल का वह भाग गलत है जिसमें वो लोग हैं जो आत्म–साक्षात्कारी नहीं है। वायु भाग (Wind Part) ठीक है। परन्तु मैंने देखा है कि बहुत से लोग मेरे कार्यक्रम में आते हैं, आत्म–साक्षात्कार प्राप्त करने के लिए आते हैं, कुछ क्षणों के लिए उन्हें चैतन्य लहरियाँ (The Wind) महसूस होती हैं। परन्तु तुरन्त वे वहाँ से चले जाते हैं और अति चेतन हो जाते हैं।

अब हम देखेंगे कि अतिचेतन अस्तित्व क्या होता है और अतिचेतन प्रवेश क्या होता है? आप देखें कि यहाँ (आज्ञा चक्र) दो पंखुड़ियाँ हैं। एक अहं को नियन्त्रित करने वाली पीयूष ग्रन्थि (Pituitary Gland) को देखती है तथा दूसरी प्रतिअहं को नियन्त्रित करने वाली शंकु रूप ग्रन्थि (Pineal Gland) को देखती है। परन्तु इनमें दोनों ओर जाने की क्षमता होती है। मान लो व्यक्ति अतिचेतन हो जाता है और बहुत अधिक सोचने लगता है, भविष्य के विषय में कि आकाश गंगाएँ क्या हैं, हमें इसके विषय में पता लगाना चाहिए, सितारों के विषय में पता लगाना चाहिए। इन सभी चीजों के बारे में या भविष्य के विषय में, जैसे ज्योतिष शास्त्र और भविष्यवाणियों के विषय में, ये सब भविष्यवाद है। आप में से अधिकतर लोग भविष्यवादी हैं। आप योजनाएँ बनाते हैं और प्रायः ये योजनाएँ असफल हो जाती हैं। परन्तु योजनाएँ बनाना और सोचना बहुत अधिक है तथा यह व्यक्ति को इस ओर बहुत दूर तक धकेल सकता है। मैंने यह इस ओर दर्शाया है परन्तु यह दिशा परिवर्तन कर लेता है। अहं इधर (बायीं आज्ञा चक्र) पर आ जाता है और प्रतिअहं दाईं आज्ञा पर आ जाता है। यहाँ पर हम तीन आयाम नहीं दर्शा सकते थे। अतः आज्ञा चक्र के पीछे से यहाँ तक प्रतिअहं है और यहाँ से यहाँ तक अहं। अतः अहं इस ओर फैलता है तथा इस ओर फैलने पर यह अतिचेतन क्षेत्र में चला जाता है और यहाँ आ जाता है। अति चेतन क्षेत्र व्यक्ति को स्वप्न स्थिति (Visions), द ष्टि भ्रम (Halucinations) और L.S.D. का प्रभाव देता है। तब व्यक्ति किसी म तक प्राणी की आँखों से देखने लगता है, किसी ऐसे प्राणी की आँखों से जो अत्यन्त महत्वाकांक्षी हो। उदाहरण के रूप में आपको हिटलर तथा किसी प्रकार के भयानक राजाओं का द ष्टि भ्रम मिल सकता है। व्यक्ति को रंग दिखाई देने लगते हैं परिमल (Auras) दिखाई पड सकते हैं। ऐसे में व्यक्ति को समझ जाना चाहिए कि ये परिमल हमें तभी दिखाई देते हैं जब हम अपने अस्तित्व से परे

हटने लगते हैं, विघटित (Disintegrate) होने लगते हैं। इस प्रकार से हम अपने से परे होता हुआ कुछ देखने लगते हैं। सहजयोग में परिमल (Auras) देखना अच्छा चिन्ह नहीं है।

व्यक्ति यदि परिमल देखता है तो हमें उसे उसकी पूर्व परिस्थिति में वापस लाना पड़ता है क्योंकि आपको वर्तमान में रहना हैं, भविष्य में नहीं। व्यक्ति विघटित हो जाता है। यदि परिमल का फोटो लेने वाली कोई मशीन हो, परिमल का फोटो लेने वाले एक व्यक्ति से मैने बात की, आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने के पश्चात् व्यक्ति किसी भी प्रकार के परिमल नहीं देख सकता क्योंकि वह संघटित हो जाता है। व्यक्ति यदि विघटित अवस्था में हो तो वह परिमल (Auras) देखने लगता है, जैसे कैंसर रोगी को परिमल दिखाई देंगे, शराबी को परिमल दिखाई देंगे– अजीबो गरीब किस्म के परिमल। सामान्य व्यक्ति को यदि परिमल दिखाई भी देंगे तो वह इतने अटपटे नहीं होंगे, परन्तु यदि आप पूर्णतः संघटित हैं तो परिमल दिखाई दे ही नहीं सकते। प्रकाश में यदि अस्थिरता (Aberrattion) न हो तो इसका अर्थ है कि प्रकाश अच्छा है। प्रकाश में अस्थिरता का अर्थ है प्रकाश की गुणवत्ता अच्छी न होना। प्रकाश के सातों रंगों को केन्द्रित होकर संघटित होना आवश्यक है। ये रंग यदि समपार्श्वीय (Prismatic) हों और रंग यदि अलग अलग नजर आ रहे हों तो ये संघटित (एक रूप) नहीं होते। सारे रंग यदि एक रूप होंगे तो आपको सात रंग नज़र नहीं आएगें। इसी प्रकार से परिमल देखने वाला व्यक्ति भी संघटित नहीं होता।

ये सारे परिमल हमें इसलिए दिखाई देते हैं क्योंकि हमारी रचना सात तत्वों से हुई है। परन्तु राजसिक प्रव ति के लोग मानव रचना के केवल पाँच तत्वों को ही जिम्मेदार मानते हैं। इन्हें 'कोष' कहा जाता है। मेरे विचार से इन्हें दर्शाने का कोई उपाय नहीं है। परन्तु यह कोष हैं जिनका स जन पहला, दूसरा तथा तीसरा चक्र करते हैं। (मूलाधार, स्वाधिष्ठान, नाभि)। ये भौतिक शब्द हैं। ये सब भौतिक शब्द हैं। चौथा, पाँचवा, छठा और सातवां चक्र बाहर की ओर परिमल नहीं बनाते हैं। ये हमारे अन्दर हृदय के समीप परिमल बनाते हैं। ये हृदय के समीप परिमल बनाते रहते हैं परन्तु आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होते ही ये सब परिमल एक रूप हो जाते हैं। ये सब विलय होकर एकरूप हो जाते हैं और यही आत्मा है। इस प्रकार आप कह सकते हैं कि आत्मा जब अस्थिर अवस्था में विद्यमान होती है तो आप सात चक्रों से परिमल प्राप्त करते हैं परन्तु जब यह स्थिर (संघटित) हो जाती है तो आप एक रूप हो जाते हैं और सभी परिमल भी एक परिमल का रूप धारण कर लेते हैं। अतः संघटन (एक रूपता) सहजयोग का लक्ष्य है क्योंकि मैं सोचती हूँ कि मैंने आपको बता दिया है कि आप भी विघटित व्यक्ति की तरह से अवचेतन (Subconscious) क्षेत्र में जा सकते हैं। अवचेतन क्षेत्र हमारे बाई ओर है। यदि आप सामूहिक अवचेतन क्षेत्र मे चले गए तो आप कैंसर रोग के शिकार भी हो सकते हैं। सामूहिक अवचेतन क्षेत्र में चले जाने पर आपको हृदयघात, शक्कर रोग या ऐसा ही कुछ और भी हो सकता है।

बहुत से लोगों का ये मानना है कि अधिक शक्कर खाने से शक्कर रोग हो जाता है ये बात सत्य नहीं है। शक्कर के कारण शक्कर रोग नहीं होता, बहुत अधिक सोचने से शक्कर रोग हो जाता है। जो लोग अधिक नहीं सोचते उन्हें ये रोग नहीं होता। भारतीय किसानों को कभी शक्कर रोग नहीं होता, वो तो ये भी नहीं जानते कि ये रोग है क्या? आप लोग क्योंकि बहुत अधिक सोचते हैं, बहुत

अधिक कार्य करते हैं तो यह चक्र (दायाँ–स्वाधिष्ठान) बहुत अधिक गतिमान हो जाता है। यह मस्तिष्क के लिए पोषण भी बनाता है। मस्तिष्क के कोषों को यह परिवर्तित करता है इसके लिए यह चर्बी में से नए कोष (cells) बनाता है। बहुत अधिक कार्यभार बढ़ने पर यह अपने सारे कार्यों को नहीं कर पाता और इस तरह से अग्नाशय (Pancreas), प्लीहा (Spleen) की अनदेखी हो जाती है। अग्नाशय को जब पूरा पोषण प्राप्त नहीं होता तो व्यक्ति को शक्कर (Diabetes) रोग हो जाता है, यह शक्कर खाने से नहीं होता। निःसन्देह शक्कर की भी भूमिका है क्योंकि शक्कर ही चर्बी में परिवर्तित होती है। शक्कर यदि खाई ही नहीं जाए तो इसके लिए कार्य दुगुना हो जाता है। परन्तु यदि व्यक्ति में शक्कर हो तो यह उसे चर्बी में परिवर्तित करता है और मस्तिष्क के लिए उपयोगी बनाता है। आप यदि बहुत अधिक सोचते हैं और शक्कर नहीं लेते तो इस चक्र का कार्य दुगुना हो जाता है। परन्तु यदि शक्कर लेते हैं और सोचते बिल्कुल नहीं तो भी समस्या बन जाती है क्योंकि उस स्थिति में स्वाधिष्ठान को बहुत अधिक शक्कर को चर्बी में परिवर्तित करना पड़ता है। आप देखें कि इसे बहुत अधिक कार्य दिया गया है, अतः संतुलन का अभाव है।

तो व्यक्ति को समझना है कि बहुत अधिक शक्कर अच्छी नहीं परन्तु शक्कर लेना आवश्यक है तथा अपने विचारों का रोकना भी बहुत आवश्यक है। किस प्रकार आप अपने विचारों को रोक सकते हैं? केवल आज्ञा चक्र से ऊपर उठने के पश्चात्। आज्ञा का ये बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि इसी से विचार रुकते हैं। ये बात आपको जान लेनी चाहिए। इस प्रकार से आपके विचार शान्त होते हैं इसमें विचार उठते हैं और गिरते हैं, एक विचार उठता है और गिरता है। इस क्रिया के बीच में (विचार का उठना और गिरना) अन्तर होता है। इस स्थान को **'विलम्ब'** कहते हैं। कोई भी विचार जो उठता है वह स्वतः गिरता भी है। एक विचार और दूसरे विचार के बीच का जो स्थान है वह **'वर्तमान'** है। विचार या तो अहं से उठते हैं या तो प्रतिअहं से और भूत में चले जाते हैं। बीच का स्थान वर्तमान है। एक भविष्य (Future) है और एक भूत (Past)। बीच का स्थान वर्तमान (Present) बढ़ाया जाना चाहिए।

विलम्ब (वर्तमान) की अवस्था जब बढ़ती है तो आज्ञाचक्र और अधिक खुलता है तथा आप निर्विचार चेतना में चले जाते हैं, निर्विचार–चेतन हो जाते हैं, वर्तमान में आ जाते हैं जहाँ कोई विचार नहीं होता। **ये विचार ही हमारे और हमारे स जनकर्ता (परमात्मा) के बीच की बाधा हैं।** उदाहरण के रूप में मान लो आप वहाँ रखे सुन्दर पत्थर को देख रहे हैं या किसी अन्य चीज़ को। अब यदि आप सोचने लगें कि, "अरे! ये तो मनुष्य जैसा प्रतीत होता है, राक्षस जैसा या देवता जैसा" उस समय आपके अन्दर विचार होता है। आत्मसाक्षात्कार प्राप्त होने के पश्चात् आप केवल देखते हैं और उसके स जनकर्त्ता ने या कलाकार ने जो आनन्द उसमें भरा है वह पूरी तरह से आपके अन्दर भर जाता है क्योंकि आपमें कोई अन्य विचार नहीं होता, कोई लहर नहीं होती, किसी तरह की हलचल नहीं होती, झील की तरह से आप पूर्णतः शान्त होते हैं, सभी कुछ इसके इर्दगिर्द है। सारी स ष्टि इसमें आ जाती है, पूरी तरह से प्रतिबिम्बित हो जाती है तथा आप निर्विचारिता, जिसे निर्विचार–समाधि कहते हैं, का आनन्द लेते हैं। जब आपमें कोई विचार नहीं होता, पूर्णतः निर्विचार होते हैं तो परमात्मा की स ष्टि का पूरा आनन्द लेने लगते हैं, उसके आनन्द में मस्त रहते

हैं। बीच में कोई बाधा नहीं रहती। अतः निर्विचार चेतना की अवस्था केवल तभी प्राप्त होती है जब कुण्डलिनी आज्ञा चक्र को पार करती है। यह दोहरा कार्य करती है–पहले स्थान पर तो यह निर्विचार चेतना प्रदान करती है और दूसरे स्थान पर सहस्रार का भेदन करके यह व्यक्ति को परमात्मा की क पा (परम–चैतन्य) से भर देती है। चैतन्य प्रवाह जब होता है तो व्यक्ति शान्ति की अवस्था में चला जाता है, उसके चक्र भी शान्त हो जाते हैं। चक्र तनाव की अवस्था में होते हैं परन्तु जब चैतन्य प्रवाह होता है तो ये अपनी सामान्य स्थिति में चले जाते हैं। तो एक प्रकार विस्तारीकरण होता है तथा आज्ञा चक्र पर निर्विचार चेतना स्थापित होने लगती है।

येशु–स्तुति (Lord's Prayer) आज्ञा चक्र का मन्त्र है। आज्ञा चक्र के दो पहलू होते हैं–हं और क्षम। 'हं' का अर्थ है मै हूँ (अहं) और क्षम अर्थात 'क्षमा', मैं क्षमा करता हूँ। आज्ञा चक्र यदि पकड़ रहा है और आप महसूस करते हैं कि आपके अन्दर अहं है तो आपको कहना चाहिए, "मैं क्षमा करता हूँ।" (I forgive) हमारे अन्दर यदि प्रतिअहं हो तो हमें कहना चाहिए, "मैं हूँ, मैं हूँ", (I am, I am)। तो 'हं' और 'क्षम' बीज मन्त्र हैं प्रार्थना के, ये बीज हैं–येशु प्रार्थना के।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि येशु प्रार्थना ठीक नहीं है। मै पूछती हूँ "आप हैं कौन? इसके बारे में आपको क्या ज्ञान है?" हर आदमी दूसरे को चुनौती दे रहा है। आप क्या जानते हैं? आपको क्या अधिकार है? परन्तु कष्ट ये है कि परमात्मा और धर्म के साथ जो जैसा चाहे कर सकता है। व्यक्ति को चाहे कुछ भी पता न हो पूर्णतः अज्ञानी हो फिर भी वह सोचता है कि उसे पूरा अधिकार है क्योंकि इस कार्य पर कोई राजनीतिक नियन्त्रण नहीं है। हिटलर भी ईसा–मसीह की आलोचना कर सकता है, कोई भी ईसामसीह की आलोचना कर सकता है और उस स्तुति की आलोचना कर सकता है। चुनौती देने वाले आप हैं कौन? ईसामसीह को चुनौती देने वाले आप कौन होते हैं? उनके मुकाबले में अपनी अवस्था को समझे बिना किस प्रकार आप उन्हें चुनौती देते हैं। ये बात मेरी समझ में नहीं आती। परन्तु ऐसा करना लोगों के लिए आम बात है। अहं के कारण वे ऐसा करते हैं। अहं व्यक्ति को सिरज़ोर बनाता है और ये निक ष्टतम बात मैंने देखी है कि अनियंत्रित अहं के कारण आप परमात्मा को चुनौती देते हैं, ईसामसीह को चुनौती देते हैं और हर उस चीज़ को चुनौती देते हैं जिसका उन्हें बिल्कुल भी ज्ञान नहीं।

आप का मस्तिष्क सीमित है। यह अत्यन्त सीमित मार्ग है। अपने इस मस्तिष्क का आप कुछ नहीं कर सकते। आपको इससे परे जाना होगा। कोई व्यक्ति ऐसा चाहिए जो आपको अन्तरिक्ष में धकेल दे, वहाँ आपको जाना होगा। आपको आत्मा बनना है। केवल आत्मा से साक्षात्कार प्राप्त करके ही परमात्मा से आपका सम्बन्ध जुड़ सकता है। उससे पूर्व आप परमात्मा से जुड़े हुए नहीं होते। यही कारण है कि आपको आत्मा बनना होगा क्योंकि आत्मा ही यह योग है, परमात्मा से जोड़ने वाली तार। इसके अतिरिक्त परमात्मा से जुड़ने का कोई अन्य मार्ग नहीं है। आप यदि स्वयं को भ्रम में रखना चाहते हैं तो आगे बढ़ते जाऐं। परन्तु मैं आपको बता रही हूँ कि केवल यही सत्य है और इसे न तो आप खरीद सकते हैं और न ही इसके लिए धन दे सकते हैं, न इसकी माँग कर सकते हैं। आप स्वयं इसे कार्यान्वित भी नहीं कर सकते।

परमात्मा की क पा–वर्षा आप पर होनी आवश्यक है या कोई साक्षात्कारी व्यक्ति ही आपको

आत्मसाक्षात्कार दे सकता है। आपको ईसामसीह के विषय में बताना होगा। एक बार मैं लगातार सात दिनों तक ईसामसीह के विषय में बोली थी, इसका कोई अन्त नहीं है। उनका अवतरण इतना महान था कि मेरी समझ में नहीं आता कि उनके विषय में क्या कहूँ। उनके बारे में सभी कुछ बता चुकी हूँ। लन्दन में हमारे बहुत से टेप हैं, आप ये मंगवा सकते हैं। वहां पर हम एक केन्द्र स्थापित करने वाले हैं। हर्मन ने अपना स्थान इस कार्य के लिए देने की पेशकश की है। यह टेप हम वहां पर भेज देंगे। ये तीन सौ टेप हम लन्दन ले आए हैं, इन्हें आप सुन सकते हैं और स्वयं देख सकते हैं। ये सभी टेप बहुत अच्छे हैं, वास्तव में ये मूलमन्त्र हैं। मंन्त्रों को ये कार्यान्वित करते हैं और इन्हें सुनते हुए आप अपने चक्रों और नाड़ियों को खोल सकते हैं। अब अन्तिम बात जो अत्यन्त उलंझन वाली है और जिसके विषय में वह पहले ही आपको बता चुका है, मुझे यहाँ आना था और मेरे विचार से यही संघटन (Integration) है। इसका अन्तिम लक्ष्य सातों चक्रों का संघटन (एकरूप हो जाना) है। तालु कहलाने वाले इस क्षेत्र के चहुँ ओर ये सातों चक्र हैं। मस्तिष्क को यदि आप कलियों के रूप में काटें तो आपको यह कमल की तरह से दिखाई देगा। ये आप देख सकते हैं कि ये ऐसा प्रतीत होगा मानों सहस्रदल कमल हो। परन्तु (चित्र में) इसका रंग ठीक नहीं है। आप लोगों को नीले रंग (Pastel colours) बहुत अच्छे लगते हैं, चित्र में भी इन्हीं का उपयोग किया गया है। परन्तु हम कह सकते हैं इसी प्रकार की एक हज़ार पंखुड़ियाँ सहस्रार कमल में हैं। बाइबल में कहा गया है कि, "मैं आपके सम्मुख शोलों की जुबान में प्रकट हूँगा।" यही शोले सहस्रार में दिखाई पड़ते हैं परन्तु ये काफी बड़े होते हैं और जीवन्त दिखाई पड़ते हैं। भिन्न रंगों के शोले, एक से दूसरे की ओर जाते हुए रंग और इनकी संख्या एक हज़ार है। चिकित्सक लोग कहते हैं कि यह संख्या एक हज़ार न हो कर के नौ सौ बानवे (992) है। इन मूर्ख लोगों के इस विषय पर विवाद करने की बात को सोचें! परन्तु यह नहीं जानते कि यह संख्या एक हज़ार है तथा इन्हें यहाँ स्थापित किया गया है। तालु क्षेत्र के चहुँ ओर सातों चक्र हैं। आप इस चित्र में देखें – ये आज्ञा चक्र है, इसके ठीक पीछे मूलाधार है, इसे घेरे हुए (कनपट्टियाँ) स्वाधिष्ठान है। मूलाधार के चहुँ ओर स्वाधिष्ठान है। आपका स्वाधिष्ठान यदि पकड़ रहा है तो आप इसे अपने अन्दर महसूस कर सकते हैं, इसके भारीपन को। स्वाधिष्ठान की पकड़ होने पर आपको शक्कर रोग भी हो सकता है। मैं इसका एक उदाहरण देती हूँ। मधुमेह के रोगी कुछ समय पश्चात् अन्धे हो जाते हैं। उनकी आँखों की शक्ति समाप्त हो जाती है क्योंकि ये रोग मूलाधार चक्र द्वारा नियन्त्रित द क–तन्त्रिका (Optic Nerve) को हानि पहुंचाता है। इसे हम पीछे का आज्ञा चक्र (Back Agya) कहते हैं। पीछे की ओर मध्य में स्वाधिष्ठान चक्र है। इसमें आपको एक सुराख महसूस होगा जो मूलाधार है और इसके चहुँ ओर स्वाधिष्ठान चक्र है। इसके बाद विशुद्धि चक्र है जो विराट है। विशुद्धि चक्र यहाँ है। जब भी आपको ज़ुकाम आदि हो जाता है तो यहाँ पर कष्ट होता है। परन्तु यहाँ बाम आदि कुछ लगा लेने से सुखद महसूस होता है। विशुद्धि चक्र आपके गले से जुड़ा हुआ है। सामूहिकता से भी यदि आपको कोई समस्या हो तो भी यहाँ पर बहुत बड़ी रुकावट महसूस होती है। अब इसके पीछे की ओर नाभी चक्र है। नाभी के बाँया और दाँया दो पहलू हैं, जैसे चित्र में दिखाया है–बाई और दाई नाभी। मैं नहीं जानती कि मैंने आपको बायें–दायें के बारे में बताया है या नहीं, यह आप

पुस्तक में देख सकते हैं। कभी–कभी आपको लगता है कि नाभी यहाँ पर (गुरु चक्र के पास) है। कुछ लोगों को ऐसा इसलिए महसूस होता है क्योंकि उन्हें गुरु–बाधा होती है। नाभी के चहुँ ओर भवसागर (void) है, इसे एकादश रुद्र भी कहते हैं। भवसागर गोलाकार रूप में है तथा बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि यहीं से गुरु–बाधा महसूस होती है। व्यक्ति यदि किसी गलत गुरु के पास जाता है तो उसे यह समस्या हो सकती है। ये महान नियन्त्रक है जिसमें विध्वंस की ग्यारह शक्तियाँ हैं। ऐसे किसी व्यक्ति से यदि आपका पाला पड़े तो उसे भगा दें। तब वह आपको कोई सलाह न देगा। ऐसे व्यक्ति न तो आत्मसाक्षात्कार दे पाएँगे और न मोक्ष। जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं उन्हें छोड़ दिया जाएगा। उद्धार तो अन्तिम चीज है। अभी उसकी माँग न करें। अन्य लोगों को बचाने के लिए कुछ और समय दें। क्योंकि वो न तो कोई प्रश्न पूछेंगे और न ही अधिक समय देंगे। वह समय तो सभी आसुरी शक्तियों के लिए पूर्ण विध्वंस का समय होगा। तो यहाँ पर एकादश है। कुगुरु यदि यहाँ पर हो तो एकादश कुपित हो जाते हैं। एक बात समझ ली जानी चाहिए कि इनसे आसानी से मुक्ति पाई जा सकती है। श्रीराम के दो पुत्र सूर्य और चन्द्र की शक्तियों से परिपूर्ण थे, वो भी यहाँ स्थापित किए गए हैं। सूर्य के रूप में बुद्ध और महावीर के रूप मे चन्द्र यहाँ स्थापित किए गए हैं। जब प थ्वी पर आए तो बुद्ध ने अहिंसा की बात की और लोगों ने समझा कि वे मुर्गो और खटमलों के प्रति अहिंसा की बात कर रहे हैं। जैन कहलाने वाले अनुयायी, भारत में एक भयानक जाति है, जो इतने विकट रूप से शाकाहारी हैं कि वे धन के लालच में किसी ब्राहमण को लाते हैं और झोंपड़े में सारे गाँव के खटमल उस पर छुड़वा देते हैं। ये खटमल उसका रक्त पी लेते हैं जिसके बदले में उसे कुछ पैसे मिल जाते हैं। यह बात आज भी सत्य है। इस प्रकार के मूर्खतापूर्ण शाकाहार की कल्पना आप करें। क्या मैं मुर्गियों को साक्षात्कार दूंगी, जरा सोचें, या खटमलों को?

आप लोग मानव हैं, आप को ऐसा मांस नहीं खाना चाहिए जो आपसे बड़े पशुओं का हो, यह हानिकारक होता है। परन्तु अपने से छोटे पशुओं का मांस आप खा सकते हैं। उसे खाने में कोई नुकसान नहीं। परन्तु इस प्रकार का शाकाहार! पशुओं को कोई हानि न पहुचाएँ? परन्तु वे लोग किसी को हानि पहुंचाने से बाज नहीं आते। इस मामले में जैन लोग सबसे आगे हैं, खून चूसने वालों की तरह से, धन के लिए वे किसी की जान लेने से नहीं चूकते। शिकारी की तरह से पैसे के लिए वे किसी का भी शिकार कर सकते हैं परन्तु मुर्गा या लहसुन वे बिलकुल नहीं खाएंगे? आप जानते हैं कि लहसुन हृदय के लिए बहुत अच्छा है परन्तु वो लहसुन नहीं खाएंगे। हृदय के लिए ये गुणकारी है। जिन लोगों की रक्तपेशियाँ कठोर हो जाने का भय हो उनके लिए लहसुन अत्यन्त लाभकारी है तथा उनके लिए जिन्हें रक्तसंचार (circulation) की समस्या हो या जो जुकाम रोग से पीड़ित हों वो भी यदि लहसुन इस्तेमाल करें तो अच्छा है। जिन लोगों को हमेशा जुकाम रहता है अगर वो नियमित रूप से लहसुन इस्तेमाल करें, रात को अपने दाँतो पर ब्रश करें तो उनकी दशा बहुत बेहतर हो जाएगी। तो यह सात चक्र हैं। तालु अस्थि पर हृदय चक्र है। कल्पना करें यदि यह वह चक्र है तो मैं कहाँ रहती हूँ?

कहने से अभिप्राय यह है कि कुल मिला कर सात चक्र हैं और मैं बुलबुले की तरह से हूँ। परन्तु मैं आपके हृदय में हूँ। **अतः सहजयोग की**

कुंजी ये है कि आप मुझे पहचानें। आप यदि मुझे पहचान नहीं सकते तो सहजयोग में आप उन्नति नहीं कर सकते। यह बात मैं निःसंकोच स्वीकार करती हूँ। अपने पहले भाषण में मैं यह सब नहीं बताती परन्तु अब मुझे कहना है कि क पा करके मुझे पहचानें। आप की माँ के रूप में मेरी यह प्रार्थना है कि आप लोग मुझे पहचानें, आपने मुझे कुछ देना नहीं है, मुझसे बस लेते चले जाएँ। परन्तु मुझे पहचानें अवश्य। **आप यदि मुझे नकारते रहेंगे तो हृदय (सहस्रार) खुलेगा नहीं। ये हमेशा ढका रहेगा।** यही कारण है कि अन्त में आप कहते हैं कि श्री माता जी, मुझे मेरा आत्मसाक्षात्कार दीजिए, क्योंकि मैं प थ्वी पर आपको आत्मसाक्षात्कार देने के लिए ही अवतरित हुई हूँ। मेरा यही कार्य है और ये कार्य सभी कार्यों से कठिन है। लोगों से बातचीत करना, उन्हें इसके बारे में बताना बहुत कठिन है। वो तो हर समय विरोध में खड़े होते हैं, इतने आक्रामक हैं कि झगड़ने लगते हैं। यह इतना अक तज्ञता पूर्ण कार्य है जिसे माँ के अतिरिक्त कोई नहीं कर सकता। आप को ही ये कार्य करना होगा। आप के अतिरिक्त केवल माँ (आदिशक्ति) यह कार्य कर सकती हैं। ईसामसीह यदि प थ्वी पर होते तो अपनी ग्यारह एकादश शक्तियों से उन्होंने सभी कुछ समाप्त कर दिया होता। श्री क ष्ण को अगर ये कार्य करने के लिए कहा गया होता तो उन्होंने भी अपनी संहारक शक्तियों का उपयोग किया होता। परन्तु सभी विचारों का समन्वय और मानव स्वभाव को समझ कर सन्तुलन स्थापित करने के लिए केवल माँ की ही आवश्यकता है। यही कारण है कि कभी–कभी लोग मेरे बहुत करीब आने लगते हैं, मेरा लाभ उठाने लगते हैं या मेरे प्रति अमर्यादित होने लगते हैं, ऐसा करना गलत है। मैं जो भी हूँ, हूँ। मैं केवल प्रेम हूँ, इसमें मैं कुछ नहीं कर सकती। इस मामले में मैं वास्तव में कुछ नहीं कर सकती। एक दिन मुझे बहुत निराशा हुई। वास्तव में एक बार लोगों का स्वभाव देखकर मुझे बहुत निराशा हुई और मैंने सोचा इन सब को भूल जाऊँ। अचानक मैंने अपना फोटो देखा, अपनी आँखों को देखकर मैंने कहा, "निर्मला, तुम तो करुणा हो, तुम करुणा हो, इसमें तुम कुछ कर नहीं सकती। तुम्हारे पास कोई विकल्प नही है।" मुझे यह कार्यान्वित करना ही होगा, मैं इसका अर्थ जानती हूँ। कभी–कभी तो यह बहुत ही कठिन लगता है परन्तु मुझे यह करना है। कुछ लोग प्रश्न करते हैं, "माँ आप ही ने क्यों करना है?" मैंने कहा," आप क्यों नहीं करते?" ये तो बहुत अच्छा विचार है। मेरे साथ आएँ। मैं बहुत कुछ कर चुकी हूँ। निव त्त हो जाना मेरे लिए बहुत अच्छा होगा। इस कार्य के लिए मेरे पति आपको पैन्शन देंगे। वे बहुत खुश होंगे कि मैंने कोई ऐसा व्यक्ति खोज लिया है जो अब मेरा स्थान ले सकेगा। परन्तु अभी तक मुझे कोई ऐसा व्यक्ति मिला नहीं है। काश आप मेरा स्थान ले सकते! यह बहुत अच्छा विचार है।

निर्मला शब्द का अर्थ ही मल रहित (निष्कलंक–Immaculate) है अर्थात जिसमें पावन करने की शक्ति है। यह देवी का नाम भी है। मेरा मूल नाम ललिता है जोकि आदिशक्ति का नाम है। यह आदि माँ का नाम है। परन्तु मानव बन कर इन सभी चक्रों के साथ मुझे कार्य करना है। उदाहरण के रूप मे पिछले तीन दिनों से, आप नहीं जानते, मेरे अन्दर से कितना चैतन्य प्रवाह हो रहा है। यह बात आप वारेन और अन्य लोगों से पूछ सकते हैं। मैंने उनसे कहा कि मेरी कुछ चैतन्य लहरियाँ ले लें। उन्होंने इसका प्रयत्न किया परन्तु मुझे छू नहीं पाए। उन्होंने सिर पर हाथ रखने का प्रयत्न किया

परन्तु ऐसा न कर पाए। उनकी समझ में यह नहीं आया कि किस प्रकार मुझे छुएं। मेरे शरीर से इतना चैतन्य प्रवाहित हो रहा था। इस मानव शरीर पर इतना वज़न लेकर चलना इतना सुगम कार्य नहीं है। मानव की तरह दिखाई पड़ना, मानव की तरह कार्य करना, मानव की तरह आचरण करना ताकि सामन्जस्य बना रहे! अवतरण की आवश्यकता क्यों है? इसलिए कि सामन्जस्य बना रहे क्योंकि अचेतन (लुप्त शक्ति) तो आपसे बात नहीं कर सकती। स्वप्नों में जो भी कुछ आप देखते हैं वह बाद में अवचेतन क्षेत्र (subconscious area) से आपके सम्मुख वापस आता है। सभी विचार। आपमें इनका भण्डार है। इतना भ्रम है कि आप कुछ निर्णय नहीं कर पाते। अतः आदिशक्ति को मानव रूप में प थ्वी पर अवतरित होना पड़ा और अत्यन्त चतुराई पूर्वक आपको सब कुछ बताना पड़ा। पूरा जीवन मुझे अंग्रेजी भाषा का ज्ञान न था। अतः पहली बार मैंने अंग्रेजी सीखी। अभी भी मुझे अमेरिकन अंग्रेजी नहीं आती। मुझे आशा है कि यहाँ की यात्राओं के दौरान मैं कुछ और सीख पाऊँगी। मेरा यह स्वप्न है, यह इच्छा है कि आप लोग आत्मसाक्षात्कार प्राप्त कर लें। बाइबल तथा अन्य धर्म ग्रन्थों में इसके विषय में वर्णन है। आदिशंकराचार्य, जिन्होंने मेरा पूर्ण वर्णन किया है उनकी पुस्तक में यह स्पष्ट वर्णित है। बहुत सुन्दर ढंग से उन्होंने मेरा वर्णन किया है। भारतीय इसे सुगमता से समझ सकते हैं। यद्यपि शहरों में मेरे बहुत शिष्य नहीं हैं परन्तु लोग मेरे अवतरण के विषय में जानते हैं और समझते हैं कि मै यहाँ हूँ। अधिकतर लोग इसके विषय में जानते हैं। परन्तु वह यह नहीं समझ सकते कि मैं अमेरिका क्यों आई हूँ। वो कहते हैं कि आप यहाँ क्यों आई हैं। यहाँ के लोग आपको स्वीकार नहीं करेंगे। परन्तु मैं ऐसा नहीं सोचती। मैं सोचती हूँ कि आप महान साधक हैं जिन्होंने इस समय पर जन्म लिया है। आपको मेरे लिए कार्य करना होगा। मैं यह बात अवश्य कहूँगी कि पश्चिम के सहजयोगियों में जो परिवर्तन आए हैं, वो भारतीय लोग भी नहीं पा सकते, यद्यपि उन्हें ऐसे देश में जन्म लेने का सौभाग्य प्राप्त था जहाँ चित्त विक्षिप्त नहीं होता। चित्त ठीक स्थिति में बना रहता है, अतः वहाँ कार्य करना सुगम है। यहाँ यह कार्य कठिन है। सहजयोग यहाँ के लोगों को आकर्षित नहीं करता फिर भी आप लोग महान हैं। आप लोग सन्त बन सकते हैं। जो लोग यहाँ पर हैं उन्हें जान लेना चाहिए कि आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करने का और अन्य लोगों को साक्षात्कार देने का यह महानतम अवसर है। सर्वप्रथम आप स्वयं ठीक हो जाएँ तब आप दूसरों को भी ज्योतिर्मय कर सकेंगे।

विवेक सहजयोग के लिए प्रथम आवश्यकता है। तब आप इस परिणाम पर पहुंचेंगे और समझेंगे कि सहजयोग ही विश्व की सभी समस्याओं का समाधान है, सारी समस्याओं का समाधान है। उदाहरण के लिए पूंजीवाद और साम्यवाद (Capitalism and Communism) को लें। मैं पूंजीवादी हूँ क्योंकि मेरे पास सभी शक्तियाँ हैं परन्तु मै साम्यवादी भी हूँ क्योंकि बिना आप को दिए मैं इसका आनन्द नहीं ले सकती। ये सिलसिला चालू है। मुझे कुछ करना नहीं पड़ता क्योंकि मेरे सोचने मात्र से सब कार्यान्वित हो जाता है। ये सब ऐसा ही है। राजनीतिक समस्याएँ, आर्थिक समस्याएँ, सभी समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। श्री क ष्ण ने कहा था 'योग क्षेम वहाम्यम्'। योग प्राप्त करने के पश्चात् आपको क्षेम भी प्राप्त हो जाएगा। उन्होंने सार निकाल दिया है। वो ये भी तो कह सकते थे, 'क्षेम योग वहाम्यम', परन्तु उन्होंने ऐसा

नहीं कहा। उन्होंने कहा 'योग क्षेम वहाम्यम', पहले योग को प्राप्त करें, जुड़ जाएँ, आत्मा से एकरूप हो जाएँ तब आप पर ये सारी कृपा हो जाएगी। भौतिक वैभव, लक्ष्मी, का भी एक चक्र है जो कार्य करता है और जो भी सहजयोगी मेरी शरण में आए हैं उन पर भौतिक वैभव का आशीष भी आता है चाहे वह श्री मान फोर्ड की अति की सीमा तक न हो। इतना वैभव तो सिरदर्द है परन्तु सन्तुलित रूप से सहजयोगियों को हर कोण से और अत्यन्त समन्वित रूप से क्षेम प्राप्त होता है।

अतः समन्वयन अन्तिम सन्देश है कि आप पूर्णतः समन्वित हो जाएँ, एकरूप हो जाएँ। जो भी कुछ आप करें 'मनसा वाचा कर्मणा' (with heart, mind and body) एकरूप हो कर करें। एक ही अस्तित्व में–आत्मा में आप पूर्णतः एकरूप हैं। परमात्मा आप सब को आशीर्वादित करें।

प्रायः मैं अपने विषय में नहीं बताया करती। परन्तु आज ज्योंही मैं आई इन्होंने मुझे अपने बारे में बताने के लिए विवश किया। ऐसा करना व्यवहार कुशलता नहीं है। अपने विषय में कुछ भी कहना व्यवहार कुशलता नहीं है। बेहतर होगा कि आप मुझे पहचानें और फिर मैं आपको बताऊँ। ईसामसीह को सूली पर चढ़ा दिया गया, सभी लोगों को कष्ट दिये गये। मैं नहीं चाहती कि मेरे काम में कोई रुकावट आए क्योंकि आत्मसाक्षात्कार प्राप्ति से पूर्व आपको कुछ बताने का कोई लाभ नहीं। आत्मसाक्षात्कार के पश्चात् ही आपको बताना बेहतर होगा कि, "मैं ही आदिशक्ति हूँ (Holyghost) निःसन्देह मैं ही आदिशक्ति हूँ, वो शक्ति जिसके विषय में ईसामसीह ने कहा था। "मैंने इन्हें बताया कि इससे पूर्व मंच से मैंने कभी यह बात नहीं बताई। इनके विवश करने पर मुझे यह बात कहनी पड़ी। "श्री माताजी, एक बार आप अवश्य कहें। मैंने कहा मैं अमेरिका में इसकी घोषणा करूंगी। तो आज **'मैं घोषणा करती हूँ कि मैं ही आदिशक्ति हूँ, मैं ही वह पावन आत्मा हूँ जो आपको आत्मसाक्षात्कार प्रदान करने के लिए अवतरित हुई है।**

परमात्मा आपको धन्य करें

परम पूज्य माता जी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

बम्बई-20-01-1975

कलयुग में क्षमा के सिवाए और कोई भी बड़ा साधन नहीं है। और जितनी क्षमा की शक्ति होगी उतने ही आप शक्ति शाली होंगे। सबको क्षमा कर दें। क्षमा वही कर सकता है जो बड़ा होता है। छोटा आदमी क्या क्षमा करेगा? आज मैंने सवेरे कहा था कि धर्म को जानें, आपके अन्दर जो धर्म है उसको जानें। धर्म में खड़े हैं, जो आदमी धर्म में खड़ा है उसकी कितनी शक्ति होती है! तो धर्म को जानें। हाँ कितना सुन्दर हम धर्म में खड़े हैं, जो अधर्म में खड़ा है वह तो अधर्मी है। उसका हमारा कोई मुकाबला नहीं है। वह तो अधर्म में खड़ा है। हम तो धर्म में खड़े हुए है, हमारा तरीका ही और है। जो धर्म में खड़ा है उसका तरीका ही और होता हैं, जो अधर्म में होता है उसका कुछ और होता है। धर्मवाले से अधर्म वाले का मेल जोड़ हो नहीं सकता। हमें यहाँ तकलीफें हो रही हैं, परेशानी हो रही है लेकिन हम तो अपने धर्म पर खड़े हुए हैं न। यह सबसे बड़ी बात है। अपनी शक्ति को अन्दर जानो जो सिर्फ धर्म स्वरूप है। और धर्म कुछ नहीं सिर्फ प्रेम है और जब प्रेम ही सब कुछ है तो क्षमा उसका एक अंग है। कितना कौन जुल्म कर सकता है, देखते हैं हमारे प्रेम के आगे। कितना कौन दुष्टता कर सकता है, कौन कितना घर का भेदी होगा, कौन कितनी तकलीफें देगा, कौन कितना परेशान करेगा, करने दो। प्यार के आगे सब चीज़ झुक जाती है। यही एक तरीका है जो कलयुग में बैठता है। और तो मेरी समझ में कुछ नहीं आता। अगर आप सोचते हो कोई पुराने तरीके आप इस्तेमाल कर सकते हो तो यह हो नहीं सकता। इसका एक कारण है आप लोग जान लीजिए, मैंने पहले भी बताया और मैं फिर बता रही हूँ, कि पूर्णतया साधु और पूर्णतया सन्त संसार में नहीं है। हर एक सन्त साधुओं में भी एक एक राक्षस है। आपके चित्त में घुसे हुए हैं। बात समझ में आई? अगर कोई साधु ही सिर्फ हो तो ठीक है। 'परित्राणाय साधुनां विनाशाय च दुष्क ताम्'। साधु के साथ एक दुष्ट बैठा हुआ है तो बहुत ही प्रेम से अलग हटाना पड़ेगा कि नहीं? कितना कठिन काम है? आप साधुता में खड़े हैं या आप दुष्टता में खड़े हैं यह आप पर निर्भर करता है। अगर आप साधुता में खड़े हैं और कोई दुष्टता चिपक रही है तो उसको हटा सकते हैं। लेकिन आज ऐसे शुद्ध जीव कितने हैं संसार में बताईए। Degree का फर्क है और जो लोग सधुता की ओर जा रहे हैं वे लोग साधुता को बटोरें। उनको उन लोगों से मतलब नहीं रखना चाहिए जो असाधु हैं। जो असाधु हैं, जो चोर हैं, बिलन्दर हैं, उनका हमसे क्या मुकाबला? वे चोर ही हैं और हम वो नहीं हो सकते, वे यह नहीं हो सकते। हमसे उनका कोई मुकाबला है? यह हो ही नहीं सकता। वह तो दूसरी line पर चल रहा है, हम तो दूसरी line पर चल रहे हैं। पर धर्म में ही जागना सहजयोग का लक्षण है और कोई लक्षण नहीं है सहजयोग का। सीधा हिसाब किताब है। सहजयोग का इन सब चीज़ों से बिलकुल भी सम्बन्ध नहीं है। अपने धर्म में जागना है, अपने प्रकाश को पाना है। अपने को जानना है। कोई कहता है माताजी क्या करें। चक्रों को ऐसा चढ़ाएँ। अंगुली ऐसे घुमाएँ कि वैसा करें। सारे यह घुमाने फिराने में आदीगतियां primordial movements हैं। यह सारे जो में आपको बता रही हूँ, primordial जो बनाई गई। लेकिन उसका अर्थ तभी होगा कि शुद्ध तरह से चीज़ का प्रवाह होना। अन्दर से अगर mixed चीज़ प्रवाहित है तो जब आप हाथ घुमाते है तो उसमें थोड़ा mixed ही घूम रहा है। क्षमा के सिवाय शुद्धता अन्दर नहीं आती और जब शुद्धता आएगी तो प्रकाश धर्म का फैलेगा, शुद्ध निर्मल।

अतः जिसके पास धर्म है उसको प्रकाश में आना होगा, बोलना होगा, बताना होगा। लेकिन उसके हर व्यवहार में खुद उसको सोचना चाहिए कि धर्म दिखाई दे रहा है कि अधर्म दिखाई दे रहा है। इससे पहले, अगर realization से पहले आपको यह Lecture देती तो बहुत गलत काम हो जाता है क्योंकि conditioning होता है। और यही बात है कि सारे psychologist ने धर्म को खत्म कर दिया और बता दिया कि जितने भी धर्म है, यह सिखाते हैं कि यह नहीं करो, वह नहीं करो। इससे conditioning mind की होती है। ठीक बात है। लेकिन अब यह नहीं होने वाला है। अब आप जो भी चाहे अपने मन से कर सकते हैं। There will be no conditioning at all. क्योंकि ego और super-ego के बीच में आपका चित्त लाकर खड़ा कर दिया है, धर्म खुद ही उठ रहा है। आप नहीं उठा रहे। उसका मार्ग आप ने चुना है और जो भी लौकिक जाना है आप ने, जो भी लौकिक जाना है, संसार में ऐसा वैसा है उससे आप अलौकिक को तोल नहीं सकते। अलौकिक का मूल्य उससे आप नहीं जोड़ सकते। अलौकिक की बात मैं कर रही हूँ। आप लोग लौकिकता से उसको देख रहे हैं। लौकिकता के तीन dimensions खत्म हो गये। चौथे dimension में जिसको ढूंढना है, गहराई से, गम्भीरता से, चौथे dimension में चलने की बातचीत मैं कर रही हूँ। लौकिक चीज़ों से आप अलौकिक चीजों का मूल्यांकन नहीं कर सकते। क्या सताया लोगों ने? कुछ भी नहीं सताया। हम तो कहते हैं कि हम तो बिलकुल आराम से हैं। जैसे हमने अपनी तकलीफें देखी हैं, जैसे जैसे लोग हमने देखे हैं कि उनके लिए जोड़े से गालियाँ नहीं मिलेंगी, आपको जोड़े से उनका वर्णन नहीं मिलेगा। ऐसे ऐसे महादुष्ट थे। लेकिन समाज की स्थिति बहुत अच्छी है आज। आपकी भी स्थिति बहुत अच्छी है। लेकिन अपने ही साथ छल कपट नहीं करो। अपने ही साथ छल कपट नहीं करो। सीधा हिसाब है। सहजयोग के साथ आप जो भी कर रहे हैं वे आप अपने ही साथ कर रहे हैं। हिसाब यह जोड़ लीजिए। हाँ अब यह प्रश्न बहुत बार हो जाता है Adminstration में ऐसा प्रश्न होता है कि क्या करें? यह ठीक है कि नहीं, और इतना आसान कि, इतना आसान है कि कोई भी decision लेने से पहले निर्विचारिता में जाओ। अपने आप जो decision सामने आ जाए वह करिये। कभी गलत हो ही नहीं सकता। पर decision निर्विचारिता में Spontaneous होगा और विचार में अगर आप ने कर लिए तो वह biased होगा। क्योंकि उसमें आपका ego और superego दोनों काम करते हैं। आपका जो कुछ भी संसार है, आपने जो कुछ भी लौकिक कमाया है वह आपके पीछे में खड़ा रहेगा। लेकिन निर्विचारिता में करियेगा तो कभी न होएगा, अलौकिक होगा, चमत्कारी होगा। चमत्कारी होगा क्योंकि हिन्दी में चमत्कारी का अर्थ होता है बड़ा ऊँचा और मराठी में होता है चमत्कारी का अजीब। एक चमत्कारी होगा मराठी वाला और एक होगा हिन्दी वाला। जब बात अलौकिकता की हो रही है तो लौकिकता के जितने भी आपके बने हुए मत हैं, preconceived ideas of human beings cannot be God. He has his own standing, his own being. आप लोग चाहेंगे कि भगवान हमारे जैसा हो जाए। यह तो वही चीज हो गई कि भगवान दो चार रुपए दे दो, उधर मैं लगा देता हूँ आपका। वह एक level हो जाएगा। वह अपना जैसे है प्रकाशित करेगा, आप अपने मार्ग को खोलते जाइए। अपने धर्म को अपने अन्दर जानिए। अपने धर्म को जानना बहुत ज़रूरी है। कितनी सुन्दर चीज़ है अन्दर में। इस नश्वर देह के

अन्दर कितनी अनश्वर चीज बह रही है। जैसे कि गंगा, यमुना और सरस्वती, तीनों के संगम की यह धारा है। इसलिए जो मिटने वाला है, जो लौकिक है उससे इस चीज़ को नहीं जान सकते। एक क्षण निर्विचारिता में जाकर के आप किसी भी चीज़ का decision ले लें। आप ऐसे decision लेंगे कि बड़े–बड़े लोगों के बस का नहीं, dynamic, absolutely dynamic। जब चिन्ता, भय क्रोध, servility, slavishness, inferiority, सारे complexes झड़ झुड़ करके, वो तो अपनी शान में बोलेगा न अन्दर। और उँसकी अपनी नम्रता है, वह इतना म दु है, इतना म दु है कि किस तरह से अन्दर चला जाता है कि पता ही नहीं चलता। जैसे झर के चाँदनी अन्दर उतर आई हो।

और जब आप चुने गए हैं तो आपका महत्व बहुत ज्यादा है। आप सोचते हैं कि हम तो ordinary आदमी हैं हम कैसे चुने गए? ordinary आदमियों में से ही चुने जाएंगे और यह जितने भी extraordinary आदमी आपको दुनिया में दिखाई देते हैं कि यह बड़े बड़े पदभूषित हैं, यह सब missing link हो जाएंगे कल। हमेशा ऐसा हुआ। Evolution की हर एक stage में ऐसा ही हुआ है अगर आप देखें। जो बहुत ऊँचे mamoth हुए हैं जो बहुत physically developed हुए हैं खत्म हो चुके। They are missing links। हाथी उनमें से बच गऐ, जो बीच के थे। इसी तरह जो mentally बहुत developed हुए उनमें से कह सकते हैं कि fox वह missing link में गया और उससे बढ़कर कुछ लोग हैं। लेकिन उसमें से कुत्ता बच गया, कुत्ता बच गया। इसी तरह मनुष्य में जो साधारण में से ही उठेगा। हमेशा उठता रहा साधारण में से और so called असाधारण हैं three dimension में, वह कुछ नहीं करने वाले। वे missing link हो जाएंगे, evolution stage में जैसे chimpanze को लोग जानते हैं कि वह missing link था। Evolution में वही लोग साधारण में से चुने जाएंगे। बहुत ही normal होना चाहिए। जो बड़े बड़े दण्डे सन्यासी बने घूम रहे हैं ये कही भी नहीं पहुँचने वाले। आप देख लीजिए। सब missing link हो जाने वाले हैं और जो बड़े बड़े पदभूषित हैं वे भी कहीं नहीं पहुँचने वाले। कितनों को Realization दिया हमने, राजे महाराजे, secretaries, सब अपने पद पर बैठे हुए हैं। किसी को लगता है कुछ कि हमारे अन्दर दीप कहीं जला? चिट्ठियाँ मुझे लिखते हैं मुझे बड़ा आनन्द आ रहा है। कोई कुछ करने की सोचता है कि हमने लिया, किसी और को भी बाँटें। अपना विशेष स्थान जब होता है तो अपने को भी विशेष होना पड़ता है। इसी साधारण सामान्य में से ही असामान्य निकलने वाला है। वही निखरने वाला है। धीरे–धीरे अपकी सब समझ आ जाएगा कि यह महामूर्ख है इनसे कौन बात करे। हैं बड़े भारी डॉक्टर, क्या करा जाऐ? महामूर्ख हैं; अपने को क्या करना है? ज़िन्दगी बिता दी इन्होंने कुछ नहीं किया सब चूल्हे में गया, अपने को क्या करना। अपना स्थान बहुत ऊँचा है। और इस चीज़ का कोई education नहीं हो सकता। आपका कोई education नहीं हो सकता कि मैं आप को बैठकर के educate करूँ। ABCD सिखाऊँ। यह रोज अनुभव से आपको देखना पड़ता है।

आज सवेरे मैंने बहुत पते की बात बताई कि सहजयोग में आप समष्टि में हैं। व्यक्ति में नहीं हैं, आप समष्टि में हैं। यह point आप जान लीजिए। अब गगनगढ महाराज हैं बहुत बड़े हैं। आप लोगों से बहुत बड़े, बहुत ऊँचे हैं मान लिया। 21 हजार वर्ष झकमारी उन्होंने, खुद कहा उन्होंने। 21हज़ार बार जन्म लिया और परमात्मा के चरणों में गिरे रहे

और जंगलों में रहे तब जाकर ये vibrations मिले उनको और आज तुमको खट से क्यों मिल गए भई? क्योंकि यह एक नया संसार है, एक नई बात है। यह विराट के शरीर के रोम–रोम आप लोग हो गए हैं। यह एक symbolic आदमी बना दिया। हो गया। उनकी बात भूलिए। आप सब समष्टि रूप में हैं। आपमें से जो भी आदमी समष्टि से हटना चाहता है वह पहले जान ले कि वह cancer बन जाएगा और खत्म हो जाएगा। कोई बुरा नहीं है, आप में से कोई अच्छा नहीं है। यह अंगुली दुखती है इसको दबाइए, यह हाथ दुखता है इस हाथ से इसको दबाइए। आप सब आपस में जुड़े हुए हैं। आपको मालूम है आप सब आपस में जुड़े हैं। जब आप आपनी बाधाएँ share करते हैं तो आप अपना धर्म क्यों नहीं share करते? बाधा तो आप फट से पकड़ लेते हैं, धर्म क्यों नहीं पकड़ते? क्या वज़ह है? सारी वजह ये है कि अभी हम चढ़ रहे हैं। छोटे हैं; बड़े हो रहे हैं। छोटे बच्चे है; पहले थोड़ा जलेंगे, पहले थोड़ा गिरेंगे, एक दिन जब बड़े होंगे तो अपनी अंगुलियाँ पकड़ करके हजारों को चलाएँगे। छोटे हो अभी आप। ठगे जाआगे तो कोई हर्ज़ नहीं। भोलेपन में रहें। लेकिन जो ठग रहे हैं और वह अपने को बहुत अकलमन्द समझ रहे हैं तो उनको पता होना चाहिए कि cancer बन के निकाल दिए जाओगे। वह एक मार्ग और भी है जहाँ जो जाता है फिर लौटता नहीं है। नर्क का भी एक मार्ग है,। उस रास्ते पर बहुत से लोग चलते हैं, उनको पता ही नहीं, वे सोचते हैं माताजी के सामने आओ, उनके पाँव छुओ, उनके पाँव धोओ। हो गये बड़े सन्त। वह भी एक मार्ग चल रहा है, साथ ही साथ सब चल रहा है। जब फूल खिलता है तो कली का जो कुछ गिरना है वह गिर जाता है और उसमें से सुगन्ध आती है। जो कुछ पनपने का है वह पनपता है, जो गिरने का है वह गिरते जाता है। दोनों एक ही साथ चलता है। जीवन ऐसा ही पनपता है। जिसको झड़ने का है वह जीवन अपना ही उसको गिरा देगा। उसको मरने का है, खत्म करने का है वह कर देगा। लेकिन उसका भी storing time है, उसका storing का इन्तज़ाम है। वो भी जाते हैं, और कुछ कुछ तो ऐसे जाते हैं कि वहाँ से लौटकर नहीं आते। पशु योनी से मनुष्य बने और क्या फायदा है कि मनुष्य होने के बाद आप जाकर कीड़े बन गए? आप का competition सब धर्म में होगा। हम क्या धर्म में हैं या नहीं? अपने बारे में यह सोचें और दूसरों के बारे में यह सोचें कि वो कितना धर्म में है। हम कितने धर्म में हैं और वो कितने धर्म में हैं। और अगर वो अर्धम में हैं तो वो क्यों है? उसका कौन सा चक्र पकड़ा है? चक्र की पकड़ की वजह, उसमें कोई और बात नहीं है। निर्पेक्षिता से देखिए। सिर्फ चक्र पकड़ा है न। अरे निकाल देंगे चक्र उसका भी, अगर बैठे बैठे उसके प्रति सब इच्छा करते हैं। अगर बहुत ही गई बीती चीज़ है तो छोड़िए उसको, cancer हो गया। छोड़िये उसको, दफना दीजिए। लेकिन जिसके प्रति आपको सहानभूति है, जिसका आपको लगता है कि वह ठीक होगा, उसका कुछ हाल ठीक कर सकते हैं, उसके आपके पास हैं तरीके। यह primrodial movements हैं, उनसे आप उनको ठीक करिए। आपस में share करिए, आपस के चक्र बढ़ाइए, बुरा नहीं मानिए। बिलकुल भी नहीं बुरा मानना चाहिए। जिस आदमी ने बुरा मानना जाना है वह उतना ही ग़लत होगा जो दूसरे को दुःखी करता है। बुरा मानना और दुःखी करना दोनों ही एक चीज़ हैं, एक ही क्रिया के दो अंग हैं। इसलिए बिलकुल भी बुरा नहीं मानना चाहिए। अगर कोई कहता है कि चक्र पकड़ा है तो उपकार मानना चाहिए भईया तूने

पहचाना, मैंने नहीं। अगर कोई कह दे कि तुम्हारे अन्दर में यहाँ से सॉप काट रहा है तो तुम उसका उपकार मानते हो। जिसका चक्र खराब हुआ है तो उसको भी उपकार मानना चाहिए कि यह मेरा चक्र पकड़ा है इसको निकाल दे भई, तू साफ कर दे। कभी बुरा नहीं मानना चाहिए। हालांकि और संसार से तो आप बड़े हैं ही क्योकिं आपकी vibrations हैं, और दुनियाँ में कितने लोगों को आ रही हैं। इतना बड़ा Pope है, उसके भी नहीं है। मैंने देखा है। बड़े बड़े लोगों से आप बड़े हैं लेकिन हैं तो अभी बच्चे ही न। सहजयोग में बच्चे हैं। Pope के पास तो है ही नहीं vibrations। बड़े बड़े जो बने हुए है, जिनके आगे दुनिया झुकती है और यह शंकाराचार्य, और ये है, वो हैं, उनके किसी के vibrations हैं क्या, मालूम नहीं। और तुम लोग तो जाग ति भी देते हो और पार भी कराते हो। और सबकी कुण्डलिनियाँ अंगुलियों पर फिरा रहे हो। कितनी बड़ी बात है! गणेश जी के सिवाए कोई नहीं कर सकता था पहले। इसलिए गणेश जी के हाथ में वह होता है न छोटा सा सांप, वह इसका symbolic है कि वह सबकी कुण्डलिनी घुमाते थे। अब तुम्हारे कम से कम एक तो हाथ में आ गया है कि कुण्डलिनी तो चढ़ा सकते हो सबकी! पर लौकिक से बनता नहीं। वह अलौकिक है, उसका कुछ ठिकाना नहीं है। तोड़–फोड़ कर देता है। जितना वो नाजुक है, जितना वो प्रेममय है उतना ही वो संहारी है। वो तो अपने तरीके से चलने वाले हैं। आप अपने तरीके से सिर्फ इतना करिए। कहाँ है हृदय चक्र? सबसे पहले हृदय चक्र को ठीक करिए। हमारा हृदय साफ है या नहीं? हमारे मन में किसी के प्रति क्रोध है क्या? हमारे मन में किसी के प्रति कोई आशंका है क्या? अपने हृदय से पूछें। सबसे बड़ी चीज़ है क्योंकि हृदय control करता है brain को और हृदय ही से सारा कार्य हम करते हैं और हृदय से ही सम्बन्ध है, तुम्हारा मेरा। इसलिए पहले हृदय चक्र को पूर्णतया आप लोग साफ करें। हम अपनी तरह से चीज़ सोचते हैं कि यह ऐसी चीज़ है। हृदय की तरह क्यों नहीं? कितना प्रेम हमने दिया? दूसरों को हमने कितना प्रेम दिया, दूसरों को कितनी तकलीफ दी। मुझे देसाई की चिट्ठी आई, उनके लिए लिखा उन्होंने कि मेरी wife की बड़े मदद करते हैं। मुझे बड़ी खुशी हुई, बाग बाग हो गई मेरी तबीयत यह सुन कर के। तेरे देसाई की बड़ी helpless चिट्ठी आई, मेरे wife को ऐसे हुआ। मैंने कहा, इतने लोगों को मैंने पार किया, यह दिया वो दिया, वो बेचारी मर कैसे रही है? मुझे क्या ज़रूरत है? London से उसे वहाँ vibrations भेजी। बात–बात पर आपस में मदद करें, आपस में प्रेम करें। ऐसे बन्धन में इक्कठे हो जाएंगे हम लोग कि जैसे एक ही शरीर है विराट का और उसके सहस्रार पे विराज मान हैं आप लोग, विराट के सहस्रार पर बिठाया है आप लोगों को और क्या कर रहे हैं पागल? विराट पुरुष के सहस्रार पे एक हज़ार आदमी बिठाने के हैं। और देखने को बड़ी बात लगती है। हाँ हाथ में vibrations कितने के आए हैं? आए हैं न? कुण्डलिनी को समझते हैं? उसमे तो कोई शंका नहीं आप लोगों को। हमारा क्या, खेती कर दी है, देखेंगे। सारी दुनिया के लोग करें। मुझे समझ नहीं आता कि तुम लोग छोटी छोटी चीज़ के लिए यह नहीं हुआ, वो नहीं हुआ? अरे, यह नहीं हुआ, वो नहीं हुआ, क्या होता है? तुम लोग कौन सी line में चले जा रहे हो और सोच क्या रहे हो? अब यहाँ से अगर आपको दिल्ली जाना है तो आप सोचिएगा कि वहाँ आटे का भाव क्या है? लेकिन आप को जाना है जहाँ आटा वाटा कुछ नहीं चलता। धर्म चलता है। वहाँ धर्म का भाव क्या है

यह जानना है। आटे दाल का भाव जानने की क्या जरूरत है धर्मिक लोगों को ? वहाँ क्या धर्म है, वहाँ क्या है, यह जानने की जगह वहाँ पर कौन सा politics पक रहा है? वह चीज़ है यह आप जानते हैं। अगर आपके अन्दर vibrations नहीं है तो बात अलग है। आप जानते हैं। लेकिन यह बहना बहुत ही कम चीज़ है, अभी तो कुछ हुआ ही नहीं, अभी तो बच्चे हैं आप। आपकी एक साल की भी साल गिरह मनाने को मैं तैयार नहीं हूँ। अभी तो सिर्फ ज़बरदस्ती का राम राम हुआ है। आप अपनी ओर देखिए कि मैं कुछ बदला कि नहीं, मुझमें कुछ अन्तर आया कि नहीं? मेरे अन्दर कुछ शान्ति आई कि नहीं? मेरे अन्दर कुछ हुआ? सिर्फ सुषुम्ना की जो अति सूक्ष्म नाड़ी है उसमें से खींचकर निकाला है हमने आपको। एक ही बारीक line पर बिल्कुल खींचा है, जो की कहना चाहिए कि बाल के बराबर है। सुषुम्ना खुद ही इतनी मोटी है, देखा जाए तो और वह एक के ऊपर एक चार परते हैं। लेकिन इसी vibrations से लोगों की तबीयत ठीक हो रही है। यह ठीक हो रहा है। एक आई थी Lady उसका तो चेहरा एकदम अलग दिखाई दिया। वह कहने लगी मेरा तो asthama एकदम ठीक हो गया है। यह कौन सी बड़ी बात है। वह ठीक हो गया, वह ठीक हो गया, ये कौन सी बड़ी बात है? इसमें रखा क्या है? cancer ठीक हो गया, इसमें कौन सी बड़ी बात है। यह तो होना ही था। घर में अगर बिजली जल गई तो दिखाई देने ही लगेगा। कम से कम। अगर बिजली जली तो जली, कि नहीं जली? कम से कम दिखाई तो देगी सब चीज़। उसमें कोई विशेष बात नहीं हुई। लेकिन बिजली जलने के कारण आपमें कौन सा ज्ञान आया, आपने कौन सा New dimension देखा, आपने कौन सी चीज़ नई करी। यह विशेषता है। हाँ, कैसा? चल रहा है? Now you are growing younger and younger. I am worried about you. She is getting younger and younger. Isn't, हँ। जो बोलते हैं वह सर के अन्दर से जा रहा है? दिल के अन्दर से जा रहा है? दिल के अन्दर से जाना चाहिए। सर से जाएगा तो argument करेंगे। उसका dogma बनेगा। दिल से जाने दीजिए प्रकाश होएगा। प्रेम का मज़ा उठाना है तो दिल से जाईये। हृदय चक्र को ही sacred heart कहते हैं। Christian लोग जो कहते हैं sacred heart वहीं हृदय चक्र है और उसमें भवानी का, दुर्गा का स्थान रखा हुआ है। और बहुत बड़ा स्थान है उसका। दुर्गा को समझना आपके बस का नहीं है। यह जितने भी राक्षस हैं वो भी उसी के बच्चे हैं। जो कुछ भी संसार है उसी का ही है। उनको जिन्होंने मारा, तुम्हारे प्यार के पीछे और उनका नाश किया वह उस माँ की ही शक्ति है। अपने ही हाथों को खींचना बहुत मुश्किल हो जाता है। अपने हाथ से अपने को injection देना बहुत मुश्किल हो जाता है, फिर अपने ही बच्चों को मारना दूसरे बच्चों को बचाने के लिए उससे भी कठिन बात है। लेकिन वह मारना भी एक बड़ी शक्ति का कार्य है। क्षमा का कार्य है, एक बहुत बड़ी क्षमा का कार्य है। लेकिन कलयुग में आप लोगों को कोई भवानी बनने की ज़रूरत नहीं है। शान्त हो जाइये। अत्यन्त शान्त हो जाइये। अत्यन्त शान्त हो जाइए। आपकी शान्ति ही हमारे कार्य को बढ़ाएगी। आप मान लीजिए की लोग कहेंगे सहजयोग में हमने ऐसे ऐसे लोग हमने देखें है कि जो क्रोध के बिलकुल वो थे, servility के पुतले थे, बिलकुल दबे हुए लोग थे। अजीब अभिनव वो आदमी थे। आप ही लोग हमारे सहारे हैं और कौन है? आप ही से लोग कहें बढ़िया आदमी है, first class. तबीयत का बड़ा है हर चीज से wide है। हो रहा है, काफी हो रहा

है। पहले से बहुत फर्क आ गया है। लेकिन जोरों में हो सकता है।

अब सब आपके ऊपर है। जैसे इसको सोचे, आपस में समझें, दूसरों की बात सुनें, शान्ति पूर्वक दूसरों को समझें, दूसरों को महसूस करें। तादात्मय पाएं, दूसरों के साथ, जैसे यह हाथ इस हाथ को जानता है। इस हाथ से यह brain भी जानता है और हृदय भी जानता है, और सब चीज़ एक साथ चल रही है integrated, ऐसे ही आप सबको integrated होना पड़ेगा। तभी वह हजार हाथ तैयार होंगे जो मनुष्य रूपेण इस्तेमाल किए जाएँगे। वही हज़ार हाथ जो सहस्रार में हैं। वो मनुष्यों से ही निकलेंगे, वह भी सर्वसाधारण, कोई बड़े बड़े ऋषि मुनि नहीं चाहिए उसके लिए की बैठा लिए चक्रों पर। जो बड़े बड़े लोग हैं वह तो चक्रों पर बैठे हुए चला रहे हैं। सहस्रार में तो यह सामान्य मनुष्य से निकलने वाले हैं। marathi... हँ। घर में ही सफाई पहले। मैं कह कर रही हूँ कि आपस में नहलाना शुरू करो vibrations से। Mrs. Lal आप दीजिए, ये आपको दें। पहले चक्र आपस में देख लीजिए फिर बाहर निकलें नहा धोकर, बाहर निकलें, तैयार, फिर शरद मिलें, **शरद** की आपको सफाई किया। फिर उन्होंने आपके दो हाथ सफाई किये। सफाई करते चलिए, हो गया, सब, निर्मल हो गया मामला। दुनिया में सब आफत मची हुई है और दुनिया में आपको पता नहीं क्या क्या हो रहा है। criminality बिलकुल आने वाली है। आपको पता नहीं है राक्षसों का ऐसा राज्य बना हुआ है। और राक्षस लोग ऐसी बातचीत करते हैं कि उनका आपस में गुट हो जाता है। वे ऐसे चिपक जाते है आपस में जैसे कोई glue होता है ना। वो ऐसे चिपक जाते हैं। और हमारे जो कार्य करते हैं वो बात बात में झट गिर गये। उधर गये, झट गिर गये क्योंकि स्वतन्त्रता नहीं है। और राक्षस लोगों को देखिए, उनके वो कैसे आपस में जुट करके–आ हा–हा! क्या मजा आ रहा है! इसका गला घोटा, उसको मार डाला, उसकी हालत खराब। सन्तों का गुट जब बनेगा तो सोचिए क्या होगा? सन्तों का गुट कभी बना नहीं है। यह पहली मरतबा हुआ है। सन्तों की सन्तता छूट जाएगी तो फायदा क्या ऐसे गुट का? सन्त के सारे ही लक्षण अपने अन्दर से दिखने चाहिए। marathi... मैं कह रही हूँ लाल साहब, कि आप लोगों की meeting थी, पहले वह कर लीजिए फिर पूजन करिए। क्योंकि जब चढ़ जाएगा न फिर हम कुछ बोल नहीं पाएंगे। आप लोगों की meeting में जो कार्यवाही होती है, कार्यवाही के लायक रह नहीं जाएंगे। हो गया। अब आप बता दीजिए कोई problem है क्या, बिलकुल सांसारिक gross सब कुछ बातचीत हो जाए। फिर पूजन करिए इत्मिनान से। यह जितना भी गोबर है उसको लपेट कर साफ करके फेंक आएंगे फिर बातचीत होगी। बताऐं क्या क्या problem है। अगर किसी में ज़्यादा है तो आप उसकी मदद करके उसे ठीक कर सकते हैं। पर निर्पेक्षता रखिए। निर्पेक्षता आवश्यक है। आप आप नहीं है, आप निर्मल अन्दर हैं, बाहर आपे हैं। ऐसा दूसरा कोई भी है उसका भी ऐसा ही है। आप निर्पेक्षता से दूसरे के प्रति जाग त रहें। अगर किसी में बहुत तकलीफ दिखाई देती है तो उसे ठीक करें। बुरा न मानें। अगर कोई आदमी बुरा मानता है तो इशारे से कहें। जैसे आप मेरे पैर पर हैं। किसी बात से आप बुरा माने समझ लीजिए मालूम है हमें, तो दूसरों को उसका कुछ सोचना नहीं चाहिए। जैसे कोई आदमी बीमार होता है उस तरह तो मैं आपको इशारों में बताऊंगी कि आप पैर पर आ गए। समझ गए कहाँ पर हैं चलो निकालो। आपस में मिलकर के

हम लोग आपस में सफाई करते हैं।

प्रश्न–माँ आपस में कोई भेद भाव दिखाई पड़ता नहीं है। उत्तरः है नहीं। लेकिन थोड़ा बहुत यह होता है हम लोग पाँच कदम आगे चले और छः कदम पीछे, फिर पाँच कदम आगे फिर छः कदम पीछे। सवाल उठता है कि कितने साल बाद पहुंचेंगे? वे पहुंचेंगे ही नहीं वह तो उधर ही खड़े हैं। प्रश्नः उठते तो हैं लेकिन अखिर जो नतीजा है उसमें भेद भाव नहीं बीच में पर पड़ता है। श्री माताजीः हूँ। वह भी चीज़ है जब आप अपनी awareness में उतरेंगे तो वह बिलकुल एक साथ चलेंगे। एक साथ जैसे की इतना बड़ा समुद्र है उसकी भी लहर एक साथ चलेगी। एक साथ सबका आन्दोलन चलना चाहिए। अब यही है कि एक डण्डे से चाहे, अपने को मार लो चाहे दूसरों को मार लो, बेहतर है अपने को मारो। इसमे बड़ा छोटा कोई है ही नहीं, इसमें कोई seniority का सवाल है ही नहीं। इसका reason है न आप लोग लौकिकता से आ रहे हैं जहाँ आपने देखा कि एक बड़ा होता है एक छोटा होता है। एक officer होता है एक नीचे होता है, एक राजा होता है, एक कंगला होता है, एक साधु होता है, फिर एक सन्यासी होता है। इसमें कुछ नहीं है सिर्फ एक वह चला हुआ है। churning को क्या कहते हैं? मंथन है यह। मंथन चला हुआ है। एक ऊपर एक नीचे, बस मैं मंथन ही कर रही हूँ। अब मक्खन कौन चुराएगा वह देखना है। अकलमंद जो होगा वह मक्खन चुराएगा यह तो चला ही हुआ है churning. खूब, कभी ठण्डा आएगा कभी गर्म आएगा। यह चला हुआ है और मक्खन ऊपर आएगा, और तैर जाएगा मक्खन हल्केपन से। कोई ऊँचा नीचा है ही नहीं इसमें। जिसने सोचा कि मैं ऊँचा हूँ और नीचा हूँ तो फिर एक महमाया भी बैठी हुई है, समझ लीजिए। फिर ऐसी कुण्डलिनी पकड़ के रखूँगी नीचे में कि देखूँगी कौन कौन बड़े है? कौन जो बड़े बड़े बातें करने वाले हैं। यह churning चला है जान बूझ करके हम कुण्डलिनी उतारेंगे, जान बूझ कर भी। बात यह है कि जब तक उतारेंगे नहीं, चढाएंगे नहीं, उतारेंगे नहीं चढाएंगे नहीं, तब तक काम नही बनेगा जानबूझ कर उतारेंगे। अभी जितने बूढ़े लोग हैं उन्हें पता होना चाहिए कि लौकिकता से आप ही लोग Leader हैं। लौकिकता से संसार में आप ही लोग बुजुर्ग हैं, आप ही बड़े हैं। इसलिए आपको और भी Better होना चाहिए। आप लोग सब एक हो जाएं। बच्चों को बताएँ, बच्चे हैं आपके, कि यह लौकिकता है। और अलौकिकता में कोई भी उठ जावे, जिसकी द ष्टि ऊपर में है जो पहली सीढ़ी में भी खड़ा है तो भी वह चढ़ जाएगा। उतरा तो भी वह बार बार चढ़ जाएगा। जो सोच रहा है कि मैं ही बड़ी ऊँची सीढ़ी पर हूँ, गलत है। अन्दर में उसको सोचना चाहिए और देखना चाहिए कि हम चढ़े और उतरे, चढ़े और उतरे। सबका होता है। क्योंकि मंथन चला हुआ है। मंथन में किसी का कोई स्थान नहीं बना हुआ, यह हिसाब है। सहजयोग का तरीका बिल्कुल अभिनव है, नावीण्यपूर्ण है। आज तक किसी ने किया नहीं है और न कभी मंथन हुआ है। एक आदमी, गगनगढ़ महाराज सालों तक बेचारे तपस्या करते हुए जंगल में बैठे रहे। उनसे आप लोगों का कोई लेन देन नहीं है। इस मामले में कुछ और आपको समझा नहीं सकूंगी। वह उनका मंथन नहीं हुआ। उन्होंने अपने दम पर अपने को बनाया है। अकेले ने। उनकी बात और है। उनका guidance यह है कि जैसे की गणेश जी की guidance है। आपके पास माथा पीटते हैं बहुत बार, भई इनको कैसे समझायें। तुम गणेश हो। यह गणेश नहीं है, बच्चे हैं। सोचो तुम गणेश हो, बहुत बड़े हो माना, लेकिन यह बच्चे हैं

अभी। और हमारे मंथन मे फँसे हुए हैं बेचारे। उनके बीच का जुआ हम ही हैं। और समझा रहे हैं आपको। एक बात सही है, चाहे व शंकराचार्य हो या कोई, vibration के बारे में, इतनी बड़ी बात कोई भी नही जानता था। इतनी technicalities, primordial movements, सारे कोई नहीं जानता था, चाहे आप शंकराचार्य पर डालिए या कोई और पर डालिए। कहीं भी नहीं लिखा है। पर यही बड़े बड़े जीव आए हैं संसार में। मैं आपसे बताती हूँ कि क्या जीव है एक एक! बाप रे बाप! दस बाहर साल से तैयारी हो रही है। तैयार हो जाएंगे अन्दर। तब तक आप लोग मेरे सब platform न तोड़ दीजिए, कुश्ती कर कर के। अगर मेरा platform ही तोड़ दिया तो मेरे बच्चे क्या करेंगे? संसार में इतना बड़ा खेल करने को आए हैं थोड़ा बहुत ठीक है। हूँ, organisation कैसा है कि सब चीज अपने आप सहज ही ठीक हो जाएगी। जब आपस में आन्दोलन एक रहे आपस में। एक आदमी अगर ज्यादा बोले तो ठण्डे हो जाओ, ठण्डे हो जाओ, ठण्डे हो जाओ। ठण्डा आता है न। ठण्डा आना भी चाहिए। गर्म नहीं, ठण्डे हो जाओ। ठण्डापन, संजीदापन, ठण्डेपन को अन्दर आने दो। धर्म ठण्डा है, absolute zero पर, धर्म बसता है absolute zero पर। ठण्डा लोग हिमालय पर जाते थे इसी लिए। तुम्हें हिमालय की ज़रूरत नहीं है। आप लोग अपना airconditioner खोल दीजिए इसी वक्त। अपनी ओर सचेत रहें। अपने दोषों को देखें, चक्रों को देखें और दूसरों के चक्रों में मदद करें, secretly। पहले बाद में बताने की ज़रूरत नहीं है। secretly जब आप कर सकते हैं तो क्या है? रास्ते में चलते ही चलते जब जाग तियाँ हो रही हैं तो फिर क्या है? जितना secretly करेंगे उतना पवित्र होगा, उतना ही प्रेमपूर्वक होगा। बड़ा अच्छा लगता है कोई काम secretly करें।

श्रीमाताजी के कथन

"सहजयोग में आने के पश्चात्, सहस्रार खुलने के पश्चात् आपको इन चार चक्रों में से गुजरना होगा : **अर्धबिन्दु, बिन्दु, वलय और प्रदक्षिणा।** इन चार चक्रों को पार करने के पश्चात् ही आप कह सकते हैं कि आप सहजयोगी बन गए हैं।"

परम पूज्य श्रीमाताजी

चौदहवाँ सहस्रार दिवस 1983

"जैसा आप जानते हैं, उत्क्रान्ति के लिए हमारे अन्दर सात चक्र हैं और दो इनसे ऊपर हैं। अतः इसी जीवन में ही इन नौ चक्रों को पार किया जाना आवश्यक है। यही आपका भाग्य (लक्ष्य) होना चाहिए।"

"भारत में विशेष रूप से गणपति पुले में बहुत से लोगों ने उस ज्योतित चेतना का अनुभव किया है जो सहस्रार से परे है। परन्तु इस अवस्था का वर्णन कैसे किया जाए?"

पौराणिक नाथ योगी मच्छेन्द्रनाथ ने कालज्ञान निर्णयतन्त्र के तीसरे अध्याय में इस अवस्था का वर्णन किया है : "प्रियतम (पिण्ड के अन्दर) पाँच पंक्तियों के, सोलह पंक्तियों के, चौसठ कलियों वाले, सौ दल के वास्तव में सुन्दर कमल (आज्ञा) तथा सहस्र दल का सुन्दर कमल (सहस्रार) है और इसके ऊपर अत्यन्त तेजोमय एक करोड़ पंखुड़ियों वाला कमल स्थित है। एक करोड़ पंखुड़ियों वाले कमल के ऊपर, तीन करोड़ पंखुड़ियों वाला कमल है जिसकी हर पंखुडी दीप शिखा सम है। इसके ऊपर सब कुछ अपने अन्दर समेटे हुए, शाश्वत अविभाज्य, स्वतन्त्र, अजेय, सर्वव्याप्त और निष्कलंक कमल है। अपनी स्वेच्छा से यह स ष्टि का स जन तथा प्रलय करता है। सभी जीवन्त तथा निर्जीव प्राणियों का वलय इसी लिंग में होता है।"

हम सबका भी यही लक्ष्य होना चाहिए... जब–जब भी आपको निराशा का एहसास हो रहा हो तो वर्तमान क्षण केवल वैसा ही होता है जैसा आप इसे बना लें–अतः सदैव प्रसन्न रहें।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी पुणे
नवरात्रि पूजा। 1988

पुणे युवाशक्ति को श्रीमाताजी का संदेश

प्रतिष्ठान – 18 मार्च, 2000

आप सबने जो कार्य मेरे लिए किया उसके लिए मैं अनुग हीत हूँ। आप सब यदि सहजयोग की गहनता में उन्नत हों तो मुझे अत्यन्त प्रसन्नता होगी। आपमें से बहुत से लोग अच्छे सहजी हैं।

आपको याद रखना है कि आपने आदर्श सहजयोगी बनना है क्योंकि आप ही ने पूरे विश्व को परिवर्तित करना है। आपकी माँ (श्रीमाताजी) आपसे यही आशा करती हैं। मेरी केवल यही इच्छा है। बाकी सब कुछ व्यर्थ है, मूल्यहीन है। केवल तभी आप परमात्मा के साम्राज्य में होने का आनन्द ले सकते हैं।

प्रतिदिन ध्यान–धारणा अवश्य करें। सहजयोग में परिपक्व होने का केवल यही उपाय है। आपने सभी अभागे नशेड़ियों को भी बचाना है। अपने हृदय से प्रेम, करुणा एवं उदारता प्रसारित होने दें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

अहं और प्रतिअंह

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

18-12-1978

मानव अभी परिवर्तन की अवस्था में है। उसे थोड़ी सी छलांग और लगानी होगी। तब वह उस अवस्था को प्राप्त कर लेगा जिसके लिए उसका स जन किया गया है। मानव–मस्तिष्क और हृदय दो अत्यन्त विकसित अवयव है। मानव हृदय को भी मस्तिष्क से जोड़ना चाहिए।

हमारे पेट से चर्बी उठती है और सभी चक्रों में से गुजरती हुई मस्तिष्क कोषाणुओं में परिवर्तित होकर मस्तिष्क को जाती है। चर्बी को मस्तिष्क बनने के लिए विकसित होना होता है। अर्थात मानवीय चेतना का कुछ अंश प्राप्त करने के लिए मानव मस्तिष्क का एक आयाम है जो पशुओं में नहीं है – मानसिक या भावनात्मक आयाम। जिसे हम प्रेम के रूप में जानते हैं। हम जानते हैं कि किस प्रकार प्रेम प्राप्त करना है और किस प्रकार लौटाना है। हमें सौन्दर्य और काव्य का ज्ञान है और हम ये भी जानते हैं कि इसका स जन किस प्रकार करना है। मस्तिष्क स्वभाव से त्रिकोणाकार तथा समपार्श्वीय (Prismatic) होता है। परमात्मा की दिव्य शक्ति की किरणें जब इसमें बहती हैं तो ये भिन्न कोणों में मुड़ जाती हैं और शक्ति के समान्तर चतुर्भुज के सिद्धान्त (Parallelogram) के अनुसार इस शक्ति का एक हिस्सा बाई और को चला जाता है और एक दाई ओर को। इस कारण से मनुष्य भूत और भविष्य के विषय में सोच सकता है परन्तु पशु ऐसा नहीं कर सकते।

परिवर्तन काल में मस्तिष्क को सावधानी पूर्वक सुरक्षित रखना तथा परमात्मा की इच्छा से मुक्त रखना आवश्यक है ताकि यह अपना उपयोग कर सके और विवेक का एक अन्य आयाम विकसित कर सके। इस लक्ष्य से अहं और प्रतिअहं प्रणाली का स जन किया गया। ये मानव की गतिविधियों की प्रतिक्रिया या प्रतिपल है, हर गतिविधि की एक प्रक्रिया होती है। **किसी चीज़ से यदि आप इन्कार करते हैं तो यह प्रतिक्रिया 'अहं' है। किसी चीज़ को यदि आप स्वीकार करते हैं तो ये प्रतिक्रिया प्रतिअहं है।** अहं और प्रतिअहं तालू अस्थि को पूरी तरह से ढक लेते हैं तथा अपनी इच्छानुसार कार्य करने की स्वतन्त्रता प्रदान करने वाली, सीखने के लिए अपने मस्तिष्क का उपयोग करने वाली सर्वव्यापी शक्ति से आपको अलग कर देते हैं। क्योंकि यदि विकास प्रक्रिया ने आगे बढ़ना है तो आपको प्रयत्न करते रहना होगा। अतः परमात्मा ने जो भी कुछ किया है वह आपके हित के लिए है।

उन्होंने अहं और प्रतिअहं आपको इसलिए नहीं दिया कि आप बिगड़ जांए और समाप्त हो जांए। आपमें अहं का होना आवश्यक है परन्तु इसके साथ आपको लड़ना नहीं। आपके अहं का परमात्मा के अहं से एकाकार हो जाना चाहिए। एक बार जब आप जाग त हो जाते हैं, एक बार जब आपको प्रकाश मिल जाता है तब आप ऐसा कर सकते हैं।

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

ब्रिटेन (यू० के०), 15-11-1979

ब्रिटन नाम ही अपने आप में अत्यन्त सुन्दर है। इसने पूरे देश को चमकाना है। मैं यहाँ पर पहले भी दो बार आ चुकी हूँ और हमेशा मुझे ऐसा लगा कि यदि यहाँ पर मुझे अवसर मिला तो हम यहाँ ज़ोर शोर से सहजयोग आरम्भ कर सकते हैं और एक दिन यह तीर्थ स्थल बन जाएगा। ब्रिटन में मिली जुली चैतन्य लहरियाँ हैं। यहाँ पर समुद्र है और प थ्वी माँ का भी विशेष महत्व है। परन्तु जब भी परमेश्वर अपनी अभिव्यक्ति करने लगते हैं तो किसी न किसी छद्म वेश में आसुरी प्रव तियाँ आती हैं। वहाँ एकत्र होती हैं और परमेश्वरी शक्ति से युद्ध में लग जाती हैं। यही कारण है कि ब्रिटन में मुझे मिली जुली चैतन्य लहरियाँ महसूस हुई। परन्तु कुल मिलाकर यह स्थान बहुत अच्छा है तथा यहाँ सहजयोग फलफूल सकता है। इन लोगों ने आपको सहजयोग के विषय में अवश्य बताया होगा। 'सह' का अर्थ है साथ और 'ज' अर्थात साथ जन्मा हुआ। यह योग है। परमात्मा से जिस एक रूपता को आप खोज रहे हैं वह आपके साथ ही जन्म लेती है। यह आपके अन्तःस्थित है। सभी सन्तों ने कहा है कि "परमात्मा को अपने अन्दर खोजें"। ईसामसीह ने भी यही बात कही है। इसका अर्थ यह है कि आपको खोजना होगा। यह आपका जन्मसिद्ध अधिकार है जिसे चुनौती नहीं दी जा सकती। आपको इसकी याचना करनी होगी परन्तु बिना आपकी इच्छा के परमात्मा यदि मानवीय चेतना की अवस्था से ही दिव्य चेतना में आपको परिवर्तित कर सकते तो उन्होंने यह कार्य बहुत समय पूर्व कर दिया होता। परन्तु वो ऐसा नहीं कर सकते। आपको अपनी स्वतन्त्रता में ही परमात्मा से योग माँगना होगा।

निःसन्देह आप साधक हैं। परन्तु शायद आपको इस बात का ज्ञान नहीं है कि आप क्या खोज रहे हैं। पर एक चीज़ निश्चित है कि जिस प्रकार चीजें चल रही हैं उनसे आप सन्तुष्ट नहीं हैं। आपको उससे परे कुछ खोजना है। निःसन्देह इससे परे भी कोई चीज़ है जिसके विषय में सभी पैगम्बरों, सभी धर्म ग्रन्थों तथा प थ्वी पर अवतरित हुए सभी अवतरणों ने बताया है। इस बात का भी वचन दिया गया है कि एक दिन आपका अपना मूल्यांकन किया जाएगा। परन्तु पहला मूल्यांकन तो आपका अपना होगा। आपको निर्णय लेना होगा कि आप परमात्मा को खोज रहे हैं या किसी तुच्छ चीज को। आप यदि वास्तविकता एवं सत्य को खोज रहे हैं केवल तभी आपका चुनाव किया जाएगा तथा केवल तभी आप परमात्मा के साम्राज्य के नागरिक बन जाऐंगे।

आइये देखें कि यह परमात्मा है कौन तथा मैं किसके विषय में बात कर रही हूँ? आरम्भ में केवल मौन था, केवल मौन। मौन जब जाग त हुआ, मौन को जाग त किया गया था। मौन "परब्रह्म" कहलाता है। खेद है कि मुझे संस्क त शब्द उपयोग करने पड़ रहे है, परन्तु इसका यह अर्थ नहीं है कि इसमें कोई हिन्दुत्व छुपा हुआ है। इस प्रकार के विचारों से आपको मुक्ति पा लेनी चाहिए। भारत में लोगों ने बहुत अधिक साधना की। उन्हें प्रक ति का मुकाबला नहीं करना पड़ा, जिस प्रकार इस सभागार में आते समय आज हमें करना पड़ा। वहाँ की जल–वायु अत्यन्त अच्छी एवं आनन्द–प्रदायी है। पेड़ के नीचे बैठकर लोग साधना कर सकते हैं, उन्हें प्रक ति का मुकाबला करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। साधकों के पास ध्यान–धारणा करने के लिए बहुत समय था। ध्यान धारणा करते हुए उन्होंने बहुत उपलब्धियां प्राप्त कीं, इस कार्य के लिए संस्क त भाषा का उपयोग उन लोगों ने किया।

तो 'परब्रह्म' या आप कह सकते हैं 'पूर्ण मौन' जाग त हो गया, बस, क्योंकि यह अपने आप जाग त हुआ, जिस प्रकार से हम लोग सो जाते हैं और जाग त हो जाते हैं, तत्पश्चात् यह 'मौन' 'सदाशिव' बन गया। जब 'सदाशिव' जाग त हुए इनका उदय होने लगा अर्थात् इनमें स जन करने की इच्छा हुई। उसी प्रकार से जैसे सूर्योदय के माध्यम से सूर्य निकलता है, इसी प्रकार से इस इच्छा कि अभिव्यक्ति होने लगी, यह इच्छा उनकी (सदाशिव) शक्ति बन गई और उनसे अलग हो गई। जो कुछ भी मैं कह रही हूँ वह आपको कहानी प्रतीत हो रही होगी। आपको इस पर विश्वास करने की कोई आवश्यकता नहीं, परन्तु मैं एक ऐसे बिन्दु तक पहुंचूंगी जिस पर आप विश्वास कर सकेंगे और इसके बाद धीरे–धीरे आप इस सिद्धान्त को मान लेंगें, अभी आपके लिए यह परिकल्पना मात्र है।

अतः 'श्री सदशिव' की इच्छा जब शक्ति बन गई तो यह 'शक्ति' या 'महाशक्ति' या आदिशक्ति' कहलाई। इस 'आदिशक्ति' ने एक व्यक्तित्व धारण किया तथा अस्तित्व रूप बन गई क्योंकि कार्य को करने के लिए इन्हें साकार रूप धारण करना आवश्यक था, ऐसा करना ही आवश्यक था। आपके ह्रदय में यदि केवल इच्छा है तो इसका कोई लाभ नहीं, इस इच्छा को हमें किसी आकार में परिवर्तित करना होगा, अन्यथा इच्छा तो उठती और गिरती रहेगी। तो 'श्री सदाशिव' की इच्छा आकार रूप में परिवर्तित हुई, इसने वह अस्तित्व धारण किया जिसे बाइबल में 'HOLY GHOST' तथा संस्क त भाषा में आदिशक्ति कहा गया है।

तत्पश्चात् इस 'इच्छा' नें अपने अन्दर से दो अन्य शक्तियों का स जन किया–एक कार्य करने के लिए तथा दूसरी बेहतर बनाने के लिए। तो तीन शक्तियाँ कार्यरत हो उठीं तथा इस प्रकार इन तीन शक्तियों का स जन किया गया। अब, जैसा कि हम जानते है, लोगों ने बाइबल में आदिशक्ति (Holy Ghost) के बारे में अधिक वर्णन नहीं किया। बहुत से धर्म ग्रन्थ जिन्होंने परम पिता (Father) का वर्णन विस्तार पूर्वक किया है वो भी आदिशक्ति (Holy Ghost) के विषय में अधिक नहीं बता पाए। ईसा–मसीह की माँ स्वयं आदिशक्ति का अवतरण थीं तथा ईसा–मसीह उनका जीवन खतरे में नहीं डालना चाहते थे। उन्होंने कहा तक भी नहीं कि वे (Mother Mary) आदिशक्ति का अवतरण थीं, क्योंकि यदि धर्माधिकारियों ने उनकी माँ को सूली पर चढ़ा दिया होता तो वो सहन न कर पाते और अपनी विध्वंसक शक्तियों का उपयोग कर बैठते। परन्तु नाटक खेला जाना था तथा वे (Mother Mary) अपने विषय में पूर्णतः मौन रहीं। आदिशक्ति (Holy Ghost) हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि परमपिता (Father) तो साक्षी मात्र हैं। वे तो नाटक को देख मात्र रहे हैं जो आदिशक्ति खेल रही हैं आदिशक्ति की स ष्टि का वे आनन्द लेते हैं। श्री सदाशिव की इच्छा के अनुरूप विश्व का स जन करके आदिशक्ति उन्हें रिझाने का प्रयत्न कर रही हैं। इस नाटक के वे साक्षी हैं।

अतः आदिशक्ति ने इन शक्तियों द्वारा जो हमें भी प्राप्त हो गई हैं, विश्व का स जन किया। ये शक्तियाँ इस प्रकार हैं: **पहली इच्छा (महाकाली) शक्ति है,** दूसरी शक्ति क्रिया (महासरस्वती) शक्ति है तथा तीसरी पालन कर्त्ता या भरण–पोषण करने वाली महालक्ष्मी शक्ति है। इन शक्तियों ने मानव का स जन करने के लिए कार्य किया और हम उस अवस्था तक पहुँचे हैं जहाँ हम इसके विषय में बातचीत कर सकते हैं। ईसा–मसीह के समय में भी

मनुष्य में आदिशक्ति के विषय में बात करने का क्षेम न था। मछुआरों के साथ हम क्या कर सकते हैं? आप बताएं कि किस प्रकार मछुआरों को इन चीज़ों (आध्यात्मिकता) के विषय में बताया जा सकता है। यह आरम्भिक तैयारी थी। परन्तु आप जानते हैं कि इन लोगों ने कितनी गड़बड़ की। इतनी अधिक भ्रम की स्थिति है कि लोग उन लोगों को समझ भी नही पाते जो स्वयं को धार्मिक कहते है। कट्टरपंथी और धर्म का परस्पर बैर है। वो कभी एक नहीं हो सकते। ईरान में आप ये बात देख सकते हैं। आप कहीं भी देखें, जहाँ कहीं भी लोग कट्टर हैं वो कितने धार्मिक हैं? क्योंकि 'धर्म तो 'प्रेम' है, परमात्मा भी प्रेम ही है। परन्तु इन तथाकथित धार्मिक लोगों ने कभी भी प्रेम की अभिव्यक्ति वैसे नहीं की जिस प्रकार होनी चाहिए और न ही इन्होंने परमात्मा प्राप्ति के कार्य का बीड़ा उठाया है। परन्तु अन्य सभी कार्य ये लोग कर रहे हैं जैसे परोपकार का कार्य, चन्दे एकत्र करना, बड़े स्तर पर सस्ते दामों पर चीज़ों को बेचना। साधक का ये कार्य नहीं है। इन परिस्थितियों में जब हमारा सामना उन लोगों से है जिन्होंने धर्म का आयोजन किया है या अनायोजन किया है तथा बनावटी लोग जिनसे हमारा सामना है इन सबको देखकर हम वास्तव में पूर्णतः हताश हो जाते हैं। हम विस्मित हो जाते हैं और हमारी समझ में नहीं आता कि क्या करें क्योंकि हम लोग जन्मजात साधक हैं। साधना में, हो सकता है, हमने कुछ गलतियाँ की हों, परन्तु हैं हम साधक इसमें कोई सन्देह नहीं है। आप लोग यदि साधक न होते तो आज आप किसी रात्रि भोज या बॉल न त्य (Ball Dance) में किसी अन्य स्थान पर रंगरलियाँ मना रहे होते। परन्तु ऐसा नहीं है। इन सभी चीज़ों से परे भी कुछ है जिसका वचन दिया गया है और जिसे आप महसूस करते हैं, जिसके अस्तित्व की चेतना आपको है परन्तु जिसके स्रोत तक आप अभी तक पहुँच नहीं पाए हैं। और यही कारण है कि आप खोज रहे हैं।

हमारे अन्दर तीन शक्तियाँ हैं। आपके बाईं ओर प्रेम है, आपकी इच्छा शक्ति है जिसके माध्यम से आप अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं। बाईं ओर जब यह इच्छा शक्ति लुप्त हो जाती है तो हम भी लुप्त हो जाते हैं।

मध्य में आत्मा है जो कि परमपिता परमात्मा या साक्षी रूप परमात्मा का प्रतिबिम्ब है। उस परमात्मा का जिसका निवास हमारे हृदय में है। दाईं ओर को हमारी क्रिया शक्ति है। इन तीनों शक्तियों ने हमारे चित्त और परमात्मा के बीच एक पर्दा सा बना दिया है, यह पर्दा हमारे भवसागर में है। हमारा ज़िगर इसका पोषण करता है और इस प्रकार से तीन पर्दे हमें उस आत्मा से दूर बनाए रखते हैं। न हम आत्मा को देख सकते हैं और न ही इसे महसूस कर सकते हैं। हम इसकी अभिव्यक्ति नहीं कर सकते। हम जानते हैं कि कोई 'है' जो सभी कुछ जानता है। गीता में इसे 'क्षेत्रज्ञ' कहा गया है, जिसे ब्रह्माण्ड की हर चीज का ज्ञान है। हम जानते हैं कि एक सर्वज्ञ (Knower) है और वह आपके विषय में सब कुछ जानता है। वह आपके कर्मों की, आपकी साधना की, गलतियों की, आपके अन्दर के तूफानों की तथा आप द्वारा किए गए सभी कर्मों की टेप–रिकार्डिंग की तरह से है और इस फीता अभिलेखक (Tape Recorder) को शरीर में नीचे की ओर स्थित त्रिकोणाकार अस्थि में रखा गया है। इसे कुण्डलिनी नाम दिया गया है।ये हमारी इच्छा शक्ति की अवशेष शक्ति है अर्थात जब इस ब्रह्माण्ड का स जन किया गया तो इच्छा की ये शक्ति–आदिशक्ति–पूर्ण ब्रह्माण्ड के स जन के पश्चात् भी सम्पूर्ण अवस्था में ही बनी रहीं क्योंकि वे तो

सम्पूर्ण हैं। ये बात समझनी बहुत सुगम है। आप कह सकते हैं मान लो यहाँ पर प्रकाश है और फिल्म है, पूरी फिल्म को प्रतिबिम्बित कर दिए जाने के बाद भी ज्यों की त्यों बनी रहती है। इसी प्रकार स्वयं को प्रक्षेपित करने के बाद बची हुई अवशिष्ट शक्ति, यह कुण्डलिनी है। इसका अर्थ ये हुआ कि आप कुण्डलिनी के पूर्ण प्रक्षेपण हैं। वह इच्छा शक्ति है जो अपनी अभिव्यक्ति दो शक्तियों के रूप में करती है: दाएँ ओर की शक्ति जिसे क्रिया शक्ति कहते हैं तथा मध्य शक्ति जिसे आप कुछ सीमा तक विकसित कर चुके हैं और बाकी का भवसागर है जो अमीबा अवस्था से वर्तमान अवस्था तक मानव को विकसित करने के लिए ज़िम्मेदार है।

हमें एक प्रश्न पूछना चाहिए कि अमीबा अवस्था से मानव अवस्था तक क्यों विकसित हुए? मान लो मेरे पास कुछ नट, बोल्ट आदि हैं और मैं उन्हें एकत्र करती हूँ। तब कोई भी मुझसे पूछ सकता है, "आप ऐसा क्यों कर रही हैं?" मैं कहूंगी, "मैं माईक्रोफोन बना रही हूँ। परन्तु माईक्रोफोन में भी यदि एक तार लगी हो तो उसे भी ऊर्जा के स्रोत से जोड़ना पड़ेगा। बिना ऊर्जा के स्रोत से जुड़े यह कार्य नहीं हो सकता? हमारे अन्दर भी ऐसा ही है–ये तीन शक्तियाँ, और अवशिष्ट शक्ति, जो कि इच्छा शक्ति है, यह बैठी हुई आपको पुनर्जन्म देने की इच्छा रखे हुए है। ये आपकी अपनी माँ है और जब भी इन्हें कोई अधिकारी (साधक) दिखाई देता है जिसमें इन्हें (कुण्डलिनी) उठाने की शक्ति हो तथा जो इन्हीं की तरह से प्रेममय हो, केवल तभी ये जाग त होती है। न किसी युक्ति से, न शीषार्सन करने से, न योगासन करने से, न किसी को पीटने आदि से और न ही किसी अन्य उपाय से यह जाग त हो सकती है। यह तो स्वतः घटित होने वाली क्रिया है–'सहज'। स्वतः ही यह उठती है। कहने से मेरा अभिप्राय ये है कि कोई आकर यदि मुझसे कहे कि "क्या आप मुझे विश्वस्त कर सकती हैं कि मेरी कुण्डलिनी जाग त हो जाएगी", तो मैं कहूंगी, "नहीं श्रीमान। मुझे खेद है, हो भी सकती है और नहीं भी हो सकती।" आप यदि बहुत अधिक तर्क–वितर्क नहीं करेंगे तो यह जाग त हो जाएगी। क्यों? तर्क–वितर्क करने से क्या होता है?

तर्क–वितर्क करने से क्या होता है इसका उत्तर में अवश्य दूंगी। कहने से मेरा अर्थ ये नहीं है कि आप तर्क–वितर्क न करें। अवश्य करें क्योंकि में जानती हूँ कि आपमें ये समस्या है। तर्क–वितर्क करना आपका संस्कार बन चुका है। कोई बात नहीं। जब आप तर्क–वितर्क करते हैं तो अपनी दाई ओर (पिंगला नाड़ी) या क्रिया शक्ति का उपयोग करते हैं, और इस प्रकार सामने के चार्ट में दिखाए गए पीले तत्व की स ष्टि करते हैं। इसे खड़ी बोली में 'श्रीमान अहं' कहा जाता है। जब आप बहुत अधिक सोचते हैं तो ये अहं बढ़ता चला जाता है और इसका दबाव प्रतिअहं पर पड़ता है। प्रति अहं का स जन हमारे बन्धनों के कारण होता है। अहं और प्रतिअहं के गुब्बारे जब बहुत अधिक फूल जाते हैं तो किस प्रकार हम कुण्डलिनी को उठाएँ, क्योंकि कुण्डलिनी के उपर जाने के लिए तो कोई स्थान बचता ही नहीं। अहं और प्रति–अहं को भली–भांति संतुलित होना चाहिए। अतः तर्क–वितर्क के बीच मैं कुण्डलिनी जाग त नहीं हो सकती। इसलिए मैं कहती हूँ "ये कार्य मुझे देखने दो।" इस समय तर्क–वितर्क न करें परन्तु लोगों को ये बात अच्छी नहीं लगती। वे सोचते हैं कि उन्हें चुनौती दी जा रही है। अतः मैं कहती हूँ "करते रहो (तर्क–वितर्क)"। परन्तु तर्क–वितर्क करते हुए होता ये है कि विचारों का दबाव आप पर बनता जाता है और इसी कारण से तर्क–वितर्क करके या पुस्तकें पढ़ के आप

कुण्डलिनी जाग त नहीं कर सकते।

इसके लिए आप धन नहीं दे सकते, धन से इसे प्राप्त करना तो बिल्कुल असम्भव है। परमात्मा के पास दुकान नहीं है, वे दुकानदारी करना नहीं जानते और आप उन्हें आयोजित भी नहीं कर सकते, परमात्मा को हम आयोजित नहीं कर सकते। वे हमें आयोजित करते हैं। अतः किसी भी प्रकार के आयोजन द्वारा कुण्डलिनी जाग ति के कार्य को नहीं किया जा सकता।

यह तो पूरी तरह से बीज के अंकुरण सम है। इसे प थ्वी में डालकर थोड़ा सा जल डाल दें। मैंने जैसा बताया कि मैं थोड़ा सा प्रेम जल डालती हूँ, थोड़ा सा प्रेम जल मैं आपको देती हूँ तब यह स्वतः ही अंकुरित हो जाती है। आपके अन्दर एक बीज है, एक अंकुरण तत्व है, सभी कुछ तैयार है बस इसे घटित होना है। नाराज़ होने से ये कार्यान्वित नहीं हो सकता। कुछ भी करने से यह कार्यान्वित नहीं हो पाता। आपको प्रयत्न हीन होना पड़ता है। बीज को अंकुरित करने के लिए आप कोई प्रयत्न नहीं कर सकते। किसी फूल को फल में भी आप परिवर्तित नहीं कर सकते। वास्तव में हम कोई विशेष कार्य नहीं करते हम तो केवल एक म त चीज़ को दूसरी म त चीज़ का रूप दे सकते हैं, बस। कोई भी जीवन्त कार्य हमने नहीं किया है। परन्तु यह जीवन्त प्रक्रिया है और इसे सहज भाव से ही प्राप्त किया जा सकता है।

इतना सहज भाव से ये जाग ति होती है। यह आपके सहस्रार को छूती है और आपको अपने हाथों में शीतल लहरियाँ आने लगती हैं। भारतीय धर्म ग्रन्थों के अतिरिक्त, जिसमें इसे सलील–सलील कहा गया है, अर्थात ये शीतल वायु आपको लहरों की तरह से आती है। बाइबल में भी इसे (Cool Breeze) कहा गया है। अतः पूर्ण शक्ति ही इच्छा की शक्ति है जिसने आदिशक्ति की तीन शक्तियों के रूप में अभिव्यक्ति की है–शीतल लहरियों के रूप में अभिव्यक्ति की है ये सर्वव्याप्त है। कुण्डलिनी जब उठती है तो सारे चक्रों में से गुजरती है और उन्हें छूती है। चिकित्सा विज्ञान में इन केन्द्रों को (Plexuses) के रूप में जानते हैं और इनके नीचे ही ये सूक्ष्म चक्र होते हैं। इनके ज्योतिर्मय होने पर आप आत्म–साक्षात्कारी हो जाते हैं। इस विषय पर मैं न तो कोई भाषण देती हूँ और न ही आपके मस्तिष्क को भ्रमित करती हूँ। आप स्वयं सामूहिक चेतना में आ जाते हैं। ये वास्तवीकरण है जिसकी खोज हमें करनी चाहिए। आपके अन्दर इसे घटित होना है ताकि आप परिवर्तित हो सकें। किसी व्यक्ति पर सहजयोगी का लेबल लगा देने से वह सहजयोगी नहीं बन जाता। यह इस प्रकार नहीं होता। सहजयोगी को तो वास्तविक दीक्षा (Baptism) प्राप्त करना होगा। उसकी तालू अस्थि को नरम होना होगा और कुण्डलिनी को उसका भेदन करना होगा। साधक केवल तभी सहजयोगी बन सकता है।

आप इसकी सदस्यता नहीं ले सकते। ऐसा कुछ आप नहीं कर सकते। यह स्वतः घटित होने वाली चीज़ है और यदि आपमें ये घटना नहीं हुई है तो आप सहजयोगी नहीं हैं। जब तक ये घटित नहीं हो जाती आप साधक नहीं हैं। परन्तु बाल–सुलभ लोगों में यह पल–भर में घटित हो जाती है। परन्तु जिन लोगों ने स्वयं को हानि पहुँचाई है उनमें कुण्डलिनी जाग त होने में काफी समय लगता है। वास्तव में इस देश (U.K.) में मैंने देखा है कि बहुत से सुन्दर, सत्य–साधक ईमानदार एवं विनम्र लोगों ने जन्म लिया है। प्राचीन काल के महान साधकों को अमरीका तथा इंग्लैंड़ में जन्म लेने का आशीर्वाद प्राप्त हुआ है। परन्तु वे व्यग्र हो गए और अपनी

व्यग्रता में उन्होंने स्वयं को नष्ट कर दिया और इस प्रकार से आप लोगों ने अपने सारे मनोदैहिक चक्र बिगाड़ लिए हैं। इन चक्रों में कुछ समय समस्या बनी रहेगी। परन्तु आपको प्रयत्न करते रहना है। आपने इसी के लिए जन्म लिया है। इस उत्क्रान्ति को घटित होना है। आपने अपनी आत्मा को पहचानना है, अवश्य आपको इसे प्राप्त करना है।

परन्तु अधिकार जताने से इसे नहीं पाया जा सकेगा। पहले से ही कहा गया है कि, 'विनम्र व्यक्ति ही धन्य है, उसे विनम्रता की आवश्यकता है आपके अंहकार की नहीं।' अगर मेरे सिर पर बैठकर आप ये कहें कि हमें आत्म–साक्षात्कार दीजिए तो मुझे उत्तर देना होगा कि मैं साक्षात्कार देने वाली नहीं हूँ। इसे तो आप ही प्राप्त कर सकते हैं। बिल्कुल वैसे ही जैसे बहती हुई गंगा नदी में यदि आप पत्थर फेंके तो इसमें से आपको जल नहीं मिल सकता। आपको एक घड़ा लेना होगा, खाली घड़ा और इसे जल में डुबोना होगा स्वतः ही ये घड़ा जल से भर जाएगा। अतः आपकी याचना से ही आपको पूर्ति मिलेगी और वही पूर्ति आपने खोजनी है, उसके बिना आप कभी प्रसन्न नहीं हो सकते।

निःसन्देह लंदन में भी सहजयोगी हैं परन्तु हम कीड़ी की चाल से बढ़ रहे हैं। ये वास्तविकता है। आप अन्य संस्थाओं को बढ़ता हुआ देखते हैं क्योंकि आप वहाँ पैसा देते हैं और राज्य के किसी न किसी मन्त्री पद को पा लेते हैं या ऐसा ही कुछ और हो जाता है। उनका लॉकेट पहनकर आप उस कुगुरु के महान शिष्य कहलाते हैं। ऐसा करना बहुत सुगम है, क्या ये बात ठीक नहीं है? परन्तु सहजयोगी बनने के लिए आपको अपना सामना करना पड़ता है, स्वयं को देखना पड़ता है और जब सौन्दर्य का उदय आप में होता है तब आप देख सकते हैं कि सत्य ही को आपने प्राप्त करना है और मैंने वह सत्य देना है।

आपको मेरा एहसान नहीं मानना क्योंकि सत्य प्रदान करना मेरा कार्य है। आप कह सकते हैं कि मुझे इसका पारितोषिक मिलता है, आपको आत्मसाक्षात्कार देना मेरा अपना कार्य है, मुझे ये कार्य करना है। आपका कार्य है इसे ले लेना क्योंकि यहाँ पर आप इसी के लिए आए हैं, इसमें आभार की कोई बात नहीं। ये तो प्रेम है केवल प्रेम। मुझे आपसे प्रेम करना है और आपने मुझसे ये प्रेम प्राप्त करना है। यह तो अविरल बहता रहता है, प्रसारित होता रहता है।

मैं आपको केवल ये बता रही हूँ कि इसे पाना किस प्रकार है। परन्तु हमारा मानवीय प्रेम इतना अधिक आक्रामक है कि जब कोई कहे कि मैं आपसे प्रेम करता हूँ तो हमारी समझ में ही ये नहीं आता। वहाँ से हम दूर भागते हैं, कहते हैं, "आप मुझे प्रेम करती हैं?" तो बेहतर होगा हम भाग जाएं, "क्योंकि प्रेम का अर्थ है मोह (Possession)। मानव के प्रेम का अर्थ है नियन्त्रण करना। परन्तु मेरा प्रेम मात्र प्रेम है। ये आपको शान्त करता है और एक नवचेतना कि स्थिति में आपको ले जाता है। इस नव–चेतना में आपकी अंगुलियाँ पूर्णतः ज्योतिर्मय (चेतन) हो उठती हैं और आपके हाथ आपको सूचना देते हैं कि आपके और अन्य लोगों के कौन से चक्र पकड़े हुए हैं। सेमिनार में मैं आपको सहजयोग से होने वाले सभी आशीर्वादों के विषय में बताऊंगी। सम्भवतः ये सभी सहजयोगी भी आपको इसके बारे में बता सकें।

मैं नहीं जानती कि आपकी क्या समस्याएं हैं, आपकी समस्याओं तथा प्रश्नों के विषय में मैं आपसे बात करना चाहूंगी। परन्तु इसके लिए बहुत अधिक समय न लगाऐं क्योंकि सहजयोगी समय के

विषय में चिन्तित हो उठते हैं। कारण ये है कि आरम्भ में उन्होंने भी मुझसे बहुत प्रश्न पूछे जिनकी याद करके उन्हें लज्जा आती है। दूसरे ये उत्तेजित हो जाते हैं कि प्रश्न करने के स्थान पर आप लोग आत्मसाक्षात्कार क्यों नहीं ले लेते। बेहतर होगा कि आप आत्मसाक्षात्कार ले लें। ऐसा करना आपके हाथ में है। तीसरे कभी–कभी उन्हें ऐसा लगता है कि आप ऐसे प्रश्न पूछते हैं उनका न आपके लिए कोई मूल्य है न अन्य किसी के लिए।

अतः एक बात आपको याद रखनी है कि यहाँ कोई भी चीज़ बिक नहीं रही, आपको इसके लिए कुछ देना नहीं है। यह तो निरंतर बहने वाली चीज़ है। ये ऐसी चीज़ है जिसके विषय में वास्तव में विश्व का कोई व्यक्ति नहीं जानता। निरंतर बहने वाली, अत्यन्त सुन्दर। आपने कभी अगर वह सुन्दर दृश्य देखा हो तो आप केवल इसे देखते है। इसी दृष्टिकोण से यदि आप आए, इसके प्रति अपनी आँखें खोलने के लिए, तभी ये कार्यान्वित होगा, अपनी आँखे खोलें– इसे उन्मेष कहते हैं। उस सौन्दर्य के प्रति अपनी आँखे खोलें। वही आपकी आत्मा है इसके लिए आपको तैयार रहना चाहिए और इसके विषय में कोई सन्देह नहीं होना चाहिए क्योंकि ये सन्देह करने योग्य नहीं है। परन्तु फिर भी यदि आपको कोई सन्देह है तो निश्चित रूप से मैं उसकी ओर ध्यान दूंगी। कभी–कभी बहुत अच्छे प्रश्न भी आते हैं। मैंने देखा है कि कुछ लोग बहुत अच्छे प्रश्न करते हैं और मेरी समझ में आता है कि उनकी समस्या क्या है? ऐसे प्रश्नों का हम स्वागत करेंगे परन्तु सन्देहग्रस्त व्यक्ति की तरह से न बैठें, ये भी आवश्यक है। सहजयोग बहुत बड़ा विषय है और इसे पूरा वर्णन कर पाना बहुत कठिन है। इसके द्वारा आप शारीरिक, मानसिक, भावनात्मक एवम् आध्यात्मिक सामंजस्य प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि सभी केन्द्र जागृत हो उठते हैं और जीवन के चारों आयामों को प्रकाश से भर देते हैं। आपको पूर्णत्व में ले जाते हैं जिससे सामूहिक चेतना में आप अपनी पूर्णता को खोजते हैं। ये काफी जटिल वाक्य है मैंने इसे अत्यन्त संक्षेप में बताया है। इसके विषय में यदि आपको कोई सन्देह हो तो निःसंकोच मुझसे पूछें। मैं आपकी माँ हूँ।

परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।